भारत भारती

2022

रजत से स्वर्ण की यात्रा का पहला चरण

हिंदी समाज
HINDI SAMAJ
OF WA

संपादन मंडल 2022

संपादक	:	कुशल कुशलेंद्र
संह-संपादक	:	राज्यश्री मालवीय
मुख-प्रष्ठ	:	देव कुमार
मुद्रण	:	प्रिन्ट एन्ड साइन्स, ओस्बोर्न पार्क

झर पड़ता जीवन डाली से

झर पड़ता जीवन-डाली से
मैं पतझड़ का-सा जीर्ण-पात!
केवल, केवल जग-कानन में
लाने फिर से मधु का प्रभात!
मधु का प्रभात!--लद लद जातीं
वैभव से जग की डाल-डाल,
कलि-कलि किसलय में जल उठती
सुंदरता की स्वर्णीय-ज्वाला!

सुमित्रानंदन पंत

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय.....3

अध्यक्ष की कलम से.....5

सीता का अंतिम प्रणाम.....7

सुनामी 9

मेरे मित्र!.....12

संस्कृति सीनियर्स.....17

ख़याल फ़क़ीराना.....18

किस्सा जो कहानी बन कर रह गया।.....19

संस्कृत भाषा और दर्शन का विकास.....21

कलम दवात 28

चन्दा 31

आज़ादी का अमृत महोत्सव – पोस्टर प्रतियोगिता.....33

यात्रा संस्मरण - मेरी पहली हवाई यात्रा 35

सखी 37

बचपन 41

ईश्वर प्रेम ही मानवता एवं देश प्रेम का स्रोत 42

सीता की रक्षा कैसे हो 48

पाठशाला परिचय.....49

पाठशाला की उपलब्धियां 2021-2022 50

रात का आकाश.....56

जल-मिट्टी पर तीन कुण्डलियाँ 58

रेत की मुट्ठी सा ये जीवन 59

सत्य और अहिंसा 61

नया सबेरा 63

मेरे घर आना.....64

सम्पादकीय

जीवन का अर्थ ही है गतिशीलता, क्योंकि हम अपने जीवन को समय से जोड़ते हैं और समय हमेशा एक दिशा में आगे बढ़ता रहता है। हालांकि जीवन बहुआयामी है और कई दिशाओं में एक साथ बढ़ता है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से ऐसा लगा, जैसे जीवन कहीं थम सा गया है। लेकिन उसके बाद वापस जो प्रतिबंध हमारे सामान्य जनजीवन पर लगे थे हटे और लगता है कि जीवन फिर अपनी पूरी रफ्तार से दौड़ने लगा। सीमाओं के खुलने से हम अपने सभी सगे संबंधियों, निकट के लोगों से एक बार फिर से प्रत्यक्ष रूप में मिल पाए और जब आप अपनों से मिलते हैं, अपनों की बातें होती हैं तो अपनेपन का स्वाद अपनी मातृभाषा में ही आता है।

हिंदी समाज पश्चिम आस्ट्रेलिया की ओर से हिंदी को पश्चिम ऑस्ट्रेलिया में आगे बढ़ाने के लिए हर तरह से प्रयत्न जारी है। वह चाहे हिंदी भाषी लोगों तक अच्छी हिंदी कृतियों को पहुंचाना हो या नन्हे-मुन्ने बच्चों को अपनी मातृभाषा से परिचित कराना हो या पश्चिम ऑस्ट्रेलिया के विद्यालयों में हिंदी को एक भाषा के रूप में स्वीकृति दिए जाने का प्रयास हो। इन सभी स्तरों पर हमारी और भारतीय जनमानस की कोशिशें रंग लाई है और आज हम देख सकते हैं कि पश्चिम ऑस्ट्रेलिया और अन्य ऑस्ट्रेलियाई प्रदेशों में भी हिंदी का वर्चस्व बढ़ने लगा है। हिंदी के बारे में कहे तो एक और महत्वपूर्ण मील का पत्थर इस बार गीतांजलि श्री की कृति रेत समाधि को बुकर प्राइज मिलने से हुई। जहां भी देखें उनके लेखन और उनकी पुस्तक की बहुत चर्चा है। कई दिनों बाद हिंदी पाठकों को अलग शैली, अलग आयाम के हिंदी लेखन से परिचय मिला। हमारे इस संकलन में भी आप देखेंगे कि कई अलग-अलग विषयों पर कई अलग-अलग पहलुओं से शोधपूर्ण एवं सकारात्मक रचनाएं समाहित की गई हैं।

जैसा कि आप सभी जानते हैं हिंदी समाज पश्चिम ऑस्ट्रेलिया ने पिछले ही वर्ष अपनी रजत जयंती मनाई और अब हम अपनी स्वर्ण जयंती की ओर अग्रसर है। इस संकलन को माने तो यह रजत से स्वर्ण की जयंती की यात्रा में हमारा पहला कदम है। रजत की चमक को पीछे छोड़ स्वर्ण की अभिलाषा लिए इस अंक को आप को सम्मुख रखते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। आशा है कि हमारे पिछले अंकों की तरह इस अंक को भी आपका विशेष स्नेह प्राप्त होगा। इसी आकांक्षा के साथ।

कुशल कुशलेंद्र

संपादक भारत भारती

पर्थ, जून २०२२

प्रधान कौंसल

सत्यमेव जयते

भारत का प्रधान कौंसलावास
पर्थ

यह हर्ष का विषय है कि पश्चिम ऑस्ट्रेलिया के हिंदी समाज की प्रतिष्ठित हिंदी पत्रिका 'भारत भारती' का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुझे यह जानकर गर्व महसूस हो रहा है कि भारत भारती ने गत वर्ष अपना रजत जयंती वार्षिक संस्करण प्रकाशित किया है। इस उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए भारत भारती के संपादक मंडल, प्रबंध समिति, पश्चिम ऑस्ट्रेलिया भारतीय समाज तथा इसके रचनाकारों एवं पाठकों को विदेश में हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति को वटवृक्ष के रुप में स्थापित करने के लिए भारतीय कौंसलावास की ओर से कोटिशः अभिनन्दन। भारत भारती के रजत जयंती अंक में कलम दवात, अतीत के पन्नों से और सांस्कृतिक यात्रा सरीखे कई अभिनव प्रयोग किए गए हैं।

मैं ऑस्ट्रेलिया के हिंदी समाज को विगत 25 वर्षों से अनवरत रुप से जारी इस भागीरथी प्रयास के लिए बधाई देना चाहता हूँ और शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ कि भारत की आजादी के अमृत महोत्सव के दौरान प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका के इस नए अंक में भारत और ऑस्ट्रेलिया के विभिन्न आयामों और परस्पर संबंधों की प्रगति के महत्वपूर्ण योगदान को दर्शाया जाएगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस हिंदी पत्रिका के प्रकाशन से ऑस्ट्रेलिया स्थित भारतीय समाज एक-दूसरे के और नजदीक आएगा और अपनी भाषा, अपनी संस्कृति और ऑस्ट्रेलिया में पल बढ़ रही हमारी नई पीढ़ी को एक मंच उपलब्ध होगा जिसके माध्यम से हम अपनी जड़ों से जुड़ें रह सकते हैं।

मैं पश्चिम ऑस्ट्रेलिया के हिंदी समाज को इन प्रयासों के लिए कोटिबद्ध बधाई देता हूं और 'भारत भारती' के आगामी अंक के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(अमरजीत सिंह तक्खी)

अध्यक्ष की कलम से

भारत-भारती हिंदी समाज की गौरवशाली परंपरा है। हर साल हम स्थानीय लेखकों की रचनाओं में से कुछ मोती लेकर आपके समक्ष प्रस्तुत करते है। साथ ही हिंदी समाज की साल भर की गतिविधियों का संक्षिप्त ब्यौरा आप तक पहुँचाने का सशक्त ज़रिया भी है भारत-भारती। मैं बड़ी ख़ुशी और गर्व के साथ इस परंपरा की अगली कड़ी पाठकों और सदस्यों को समर्पित करती हूँ। मैं धन्यवाद करना चाहूँगी सभी लेखकों, समिति के सदस्यों का और ख़ास धन्यवाद इस संस्करण की सम्पादकीय समिति का उनके योगदान व् कठिन परिश्रम के लिए।

इस साल दुनिया भर के भारतीय दूतावास और प्रवासी भारतीय आज़ादी की पचहत्तरवीं सालगिरह के उत्सव को हर्षोल्लास से मना रहे हैं । इन पचहत्तर सालों में प्रवासी हिंदी भाषी समुदाय ने अपने साथ हिंदी साहित्य और संस्कृति को भी आगे बढ़ाया है। अंग्रेजी ने जहाँ हमें उड़ने के लिए पंख दिए, हिंदी ने हमें अंतर्मन की आँखें दी हैं। साल २०२३ से हिंदी को WA के स्कूलों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित होने का मौका मिल रहा है। कुछ अन्य विदेशी भाषाओं के साथ हिंदी भी एक अतिरिक्त भाषा के रूप में चुनी गयी है। हम सालों से इस खुशखबरी का इंतज़ार कर रहे थे। उम्मीद है कि हमारी आने वाली पीढ़ी भी मातृभाषा से जुड़ी रहेगी । हिंदी समाज प्रयत्नरत है कि वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया में हिंदी साहित्य न सिर्फ जीवित रहे बल्कि फले फूले ।

साहित्य समाज का दर्पण होता है। इस दर्पण में समाज की हर छवि प्रतिबिंबित होती है। इस अंक के भारत-भारती में भी आपको पर्थ के हिंदी भाषी समुदाय की झलकी दिखेगी।

ढेरों शुभकामनाओं सहित

आपकी आभारी

रश्मि लोयलका

अध्यक्ष, हिंदी समाज ऑफ़ वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया

प्रबंधन समिति २०२२

रश्मि लोयल्का, अध्यक्ष

रुपेश कुलश्रेष्ठ, उपाध्यक्ष

मनीष गुप्ता, सचिव

सपना शर्मा, कोषाध्यक्ष

गौरी छिकारा, सदस्य

ममता निगम, सदस्य

पूजा भरद्वाज, सदस्य

कवीश कुमार, सदस्य

श्रद्धा वार्ष्णेय, सदस्य

राज्यश्री मालवीय, ट्रस्टी

रिक मल्होत्रा, ट्रस्टी

अंचला महिन्द्रू, ट्रस्टी

सीता का अंतिम प्रणाम

क्षमा दान दे दो मुझको प्रिय , जो बात न तुमरी मानूँ आज
ना अवध को लौट सकूँगी मैं , बस आज यहीं तक था ये साथ
जिसकी ख़ातिर तुमने मुझको ,दे दिया अचानक ही वनवास
यदि साथ मुझे ले गए आज , कैसे उसका दोगे जवाब 1

हाँ कुछ प्रश्न तो मेरे हैं ज़रूर, जो भारी तुम पर भी होंगे
बस आज नहीं युग युग तक भी ,प्रचारित इस जग में होंगे 1
जो त्याग करे इक पत्नी का , वह भी जब गर्भावस्था है
हे नाथ मुझे समझा दो तुम , ये न्याय की कौन व्यवस्था है ?

गौतम पत्नी को हृदय लगा तुम सम्मानित कर घर लाए
उनकी पीड़ा से द्रवित हो जल धार नयन से बरसाए 1
बाली से तारा को छुड़ा , सुग्रीव को तुमने सौंपा नाथ
तन से ज़्यादा मन को तुमने ,है श्रेष्ठ दिया नित ही स्थान

अपहरण हुआ वन में मेरा , लंकेश ने छल बल खेला था
है पंचवटी साक्षी मेरी , ना तनिक भी दोष तब मेरा था 1
छल छिद्र भयानक दिखा मुझे , हारा रावण कर सारे काम
अवचेतन और चेतन मन में , मैं सिर्फ़ तुम्हारी रही राम 1

कुछ प्रेम पुष्प मुझको देते , वो कुछ पीड़ा तो हर लेते
अपहरण की ज्वाला को शायद थोड़ी सी ठंडक तो देते
दी मैंने अग्नि परीक्षा तब , निर्दोष हूँ साबित करने को ,

ये दिया उदाहरण कैसा प्रिय, पीड़ित को पीड़ा देने को 1

इक धोबी की इच्छा कहकर, मुझसे तक ना छेड़ा प्रसंग

चुपचाप एक दिन भ्राता संग, मुझको भेज दिया था वन

तुम अतुलनीय बल बुद्धि समर्थ,बेचारा धोबी अज्ञानी

राजा के निर्णायक मन ने , क्या तनिक तर्क की ना मानी?

ले गया दशानन जब मुझको , उसमें मेरा क्या दोष था प्रिय?

मैं खड़ी की गयी अग्नि मध्य , तुमको मुझ पर क्यों रोष था प्रिय ?

ये उदाहरण अबला को अब , जाने कब तक है सालेगा

उनकी विपत्ति की राह में ये ,कितने और काँटे डालेगा !,

देह, वचन, और सौगंधों से तुम संग फेरे लिए थे सात

तुमसे विलग रही मैं लेकिन मन में रही सदा ही साथ 1

अवध नहीं मैं अब चल सकती, दुखों की खायी बड़ी ही मार

धरा सुता मैं धरा में जाऊँ, को मेरा अंतिम नमस्कार

लक्ष्मी तिवारी

विगत तीन दशको से ऑस्ट्रेलिया के पर्थ शहर में अप्रवासी भारतीय हूँ। मैं एक माँ हूँ, एक पत्नी और गृहणी हूँ। हिंदी मेरी मातृभाषा है। मेरे लिए कविता का प्रेरणा स्रोत प्रकृति है । प्रकृति के हर पहलू में सुंदरता के साथ रहस्य भी है जो मुझे अपनी ओर आकर्षित करता है। यह बात आपको मेरी चंद कविताएँ पढ़कर स्पष्ट हो जायेगी।

सुनामी

ये कैसी सुनामी आयी है

हर घर में छायी वीरानी है

हर आँख से बहता पानी हैं

साँसों की आवा-जाही है

मंदिर सुना मस्जिद सूने

सूने उपवन सूने आँगन

ये जगत कर रहा क्रंदन

अपनों से बिछड़ने का ग़म

अंतिम विदा न दे पाई है

ये कैसे सुनामी आयी है

मंजर भी कैसे कैसे हैं

दिल फट के रह जाता है

ये वक़्त कहाँ ले आया है

हर चेहरे पर मायूसी है

हथियार हैं कम और युद्ध बड़ा

ये विश्व जगत स्तब्ध खड़ा

यह समय का कैसा खेला है

दुश्मन भी तो देखो कैसा है

न देखा जाए वैसा है

काश़ ये सफ़र रुक जाए अब

क़ुदरत ही अब कुछ कमाल करें

जिसको हमने प्रताड़ित किया

वह पृथ्वी हमको माफ़ करे

आशा के बीज बोए फिर से

बागों को फिर आबाद करें

मिल लें अपनों से फिर से हम

माँ की बाहों में जा पाए हम

कल फिर से सूरज को देखें हँसता

तितली के पीछे दौड़े हम

मिलकर बैठे उन्मुक्त से हम

बाहों में बाहें डाले

ज्योति माथुर

स्वयं की माइनिंग कंपनी में मैनेजिंग डायरेक्टर के पद पर हूँ और शौक़िया तौर से कविताएँ लिखती हूँ।

कुछ रचनाएँ हिंदी समाज के भारत-भारती में प्रकाशित हुई हैं तथा कुछ कविताएँ अनुराग्यम् ग्रुप में भी प्रकाशित हुई हैं।

BHARAT BHARATI
2021

AZADI KA

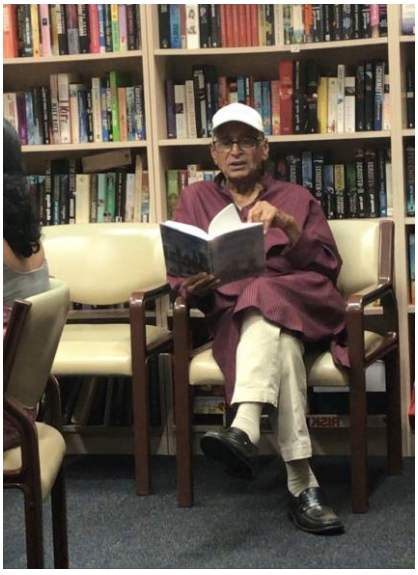

मेरे मित्र!

मेरे प्रिय पुस्तकालय!

नमस्कार। मैं यहाँ कुशलपुर्वक हूँ। तुम्हारी कुशलता की क्या बात करूँ? बचपन में तुम्हारी क्या आन बान और शान थी। शहर के बीचोबीच तुम्हारी उपस्थिति मानो ज्ञान का प्रभामण्डल थी। अब मैं तुमको छोड़ कर मेलबोर्न शहर में आ गया हूँ। मेरे मित्र, पहले तूने ही बताया कि आस्ट्रेलिया और मेलबोर्न कहाँ हैं? पर पूरी जानकारी पाकर मैं तुझसे दूर हो गया यह मेरा दुर्भाग्य है।

इधर उधर बाजार से आते जाते जब भी समय मिला तब मैं क्या सभी लोग तेरे दर्शन को आते थे और तुझसे जानकारी प्राप्त करके चले जाते थे। पुस्तकालय में सब लोग हाथ नीचा और दिमाग को ऊँचा रखते थे – संसद से उल्टा। हम जैसे 'पढ़ाकू' लोगों को ढूँढना नहीं पड़ता था। घर में या मित्रों में नहीं तो कहाँ होंगे यह केवल माता पिता या मित्र नहीं पूरा शहर जानता था।

मेरे सखा, तू तो मेरे लिये स्वर्ग था। आज भी मेरी जेब में कोई सबसे कीमती चीज़ है तो लाइब्रेरी-कार्ड। उस समय भी तुझसे ज्यादा सुन्दर जगह मुझे पता न थी। 'नैशनल ज्यॉग्रैफिक' के चित्रों की क्या बात करूँ मुझे तो 'चन्दामामा' से चित्रों का शौक तूने जगाया। जिन प्रश्नो के सही उत्तर किसी को भी पूछने में संकोच होता था उनके उत्तर मैं तुझसे जान लेता था। बल्कि तेरे उत्तरों ने भी मेरे दिमाग में नये नये प्रश्न खड़े कर डाले और उनके उत्तर भी दिए। तू कभी मेरे अज्ञान पर नहीं हँसा। कभी मुझ पर चिढ़ कर नहीं कहा कि एक ही सवाल कितनी बार पूछोगे? ऐसा भी नहीं कहा कि अभी मेरा मूड नहीं है, बाद में पूछ लेना। तेरे आगोश में मैंने धर्मयुग, साप्ताहिक हिंदुस्तान, सारिका, सरिता, विज्ञान पत्रिकाएं और अनगिनत पुस्तकें न जाने क्या क्या पढ़ा? आज जिसे मैं 'अपने विचार' कहता हूँ उसकी नींव ही तूने बनाई है। बल्कि मुझे विद्यार्थी जीवन में ही पाठक से एक लेखक और बाल-कवि बना दिया। लोग तुझे विश्व का झरोखा कहते हैं पर मैं कहूँगा मेरी कल्पना को पंख देने वाला तू है वरना उस समय मेरी आर्थिक हैसियत भी न थी कि मैं अपने पाठ्यक्रम के अलावा कोई पुस्तक खरीद पाता। कुछ लोग तुझे केवल समय बिताने का या मनोरंजन का साधन समझते थे पर तू ज्ञान दाता है इस रूप में तुझे वे पहचान नहीं पाए।

जासूसी उपन्यास पढने का शौक तूने दिया और कम उम्र में ऐसी पुस्तकें मस्तिष्क को भटका सकती हैं यह ज्ञान भी। तू कई लोगों को पुस्तक-कीट बना देता है; फिर केवल पुस्तक-कीट होना काफी नहीं है; व्यवहारिक ज्ञान होना आवश्यक है यह शिक्षा भी तू दे देता है। तूने मुझे महात्मा गाँधी पर एक पुस्तक दी थी। उसे पढ़कर मैं अभिभूत हो उठा था। समझता रहा किसी का हृदय-परिवर्तन करना हो तो बस गाँधी जी के तरीके से संभव है और आसान भी। इसका व्यवहारिक रूप से प्रयोग भी किया तब इसकी सीमा, इसकी मर्यादा समझ में आई।

आज मेरे मित्र समझते हैं कि पूरा पुस्तकालय मोबाइल में स्थित है। वे यह भूल जाते हैं कि बिना मोबाइल के एक प्रश्न की खोज के लिये जो अतिरिक्त परिश्रम करना पड़ता था उससे ही काफी ज्ञान मिलता था। सूचना को ज्ञान में ढालने का तरीका मस्तिष्क में इसी तरह स्थापित हुआ।

तूने ज्ञान की प्यास जगाई है तथा गरीब और मध्यम वर्ग की हैसियत बढ़ाई है। तू संभावनाओं का आभापुंज है; तेरी खिड़की ने मुझे अपनी आत्मा से मिलवाया और तेरे दरवाजे ने मुझे दुनिया से जोड़ दिया। सूचनाओं की सुनामी में तैरना मुझे तूने ही तो सिखलाया। दूसरों के धर्म में, दूसरों के जीवन में और दूसरों की आशाओं और सपनों के बारे में मुझे तूने ही ज्ञान दिया; नहीं तो मैं अपने ही पूर्वाग्रहों में घिर कर चक्कर काट रहा होता। मुझे क्या पूरी मानव जाति को तू ही अज्ञानता, अत्याचार, जेनोफोबिया और निराशा के खिलाफ तैयार करता हैं। तेरा परिवार ही शक्ति, बुद्धि और अनुग्रह का भंडार हैं । तेरे यहाँ नये विचारों का प्रजनन और क्रांति को जीवन मिलता है। तेरी उर्जा की झीलें गर्म भी हैं ठंडी भी। तेरे आगोश में प्रकाश ही प्रकाश है; अंधेरे का नाम नहीं। सभी पाठक व्यवस्थित रूप से तुझमें आकर शांत और लीन हो जाते हैं; अचेतन से लगते हुए भी गहरी चेतना को प्राप्त होते हैं। पागल हैं जो हथियार के पीछे भागते हैं क्योंकि तुझ जैसे पुस्तकालय बड़े अच्छे हथियार हैं।

मेरे दोस्त! सोचता हूँ अगर मैं पुस्तक होता तो किसी पुस्तकालय में होना पसंद करता क्यों कि अलग अलग बालको और वयस्कों के साथ जाता। अनेक पाठकों की जिज्ञासा शांत करने में आनंद लेता। तेरे साथ अच्छी बात यह है कि यहाँ किसी की तानाशाही नहीं चलती। 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' का तू ही समर्थक और पोषक है। कब और क्या पढ़ना है इसमें किसी का दबाव नहीं चलता। भविष्य के लिये और सफलता के लिये क्या चाहिये यह सब तुझमें ही तो लिखा रहता है। लोग ठीक कहते हैं कि पुस्तकालय और बाइसिकल दोनो आगे की दिशा में बढ़ते हैं। एक ओर जहाँ तकनीकी में सबसे कुशल मशीनें पुस्तक हैं तो दूसरी ओर पुस्तकें जीवन में प्रेम भी सिखाती हैं। ये लोगों का जीवन बदल देती हैं। पुस्तकालय कभी अनावश्यक नहीं होते जैसे कि बुक-स्टोर आज तक अनावश्यक नहीं हुए। कुछ नेता सोचते हैं रिसेशन में पुस्तकालय की क्या आवश्यकता है पर यह ऐसा है जैसे महामारी में अस्पताल बंद करना। यह कोई विलासिता की वस्तु है क्या? वे नहीं जानते कि अज्ञानी राष्ट्र की तुलना में पुस्तकालय सस्ते हैं। गूगल हजारों उत्तर दे सकता है पर शोध की बात हो तो लाइब्रेरियन उसमे से एक सही उत्तर बता सकता है। वह बता सकता है कि सूचना की सुनामी में कैसे तेरा जा सकता है। ये ज्ञान के स्मारक हैं। किसी भी गाँव, कस्बे या शहर की शोभा वहाँ के पुस्तकालय से है।

मेरे सहृदय! अब मुझे पता चल चुका है कि मेरे बचपन में तेरी स्थिति जो मेरे शहर के अन्दर थी वह नहीं रही और अब तुझे शहर से दूर एक कोने में पटक दिया है। पिछली बार जब मेलबोर्न से भारत तेरे दर्शन के लिये आया था तो तू अपनी जगह पर न मिला। तेरा पता रिक्शा वाले को पूछा तो उसे तेरे अस्तित्व का कोई पता न था। मुश्किल से तुझ तक पहुँच कर तेरी दुर्दशा देख कर मैं खूब रोया। मेरा यह आँसू से भरा चेहरा देखने वहाँ लाइब्रेरियन क्या कोई कर्मचारी या कोई पाठक भी नहीं था। काफी इंतजार के बाद एक कर्मचारी आया जो मुझे देख कर आश्चर्य में पड़ गया मानो पुस्तकालय केवल उसके खोलने और बंद करने के लिये बना है ताकी उसे वेतन मिलता रहे।

मेरे मित्र! जैसे बालक अपने पूर्वजों से अधिक स्मार्ट होते जा रहे हैं वैसे ही आजकल पुस्तकालय स्मार्ट हो गए हैं। डिजिटाइज़्ड पुस्तकें भी रखते हैं। मैंने अपने मौसम विभाग, मेलबोर्न में देखा है जहाँ पुस्तकालय बहुत महंगे शोध-आलेखों को डिजिटाइज्ड-पुस्तक के रूप में कम दामों में खरीद लेता है। यहाँ से केवल विद्वत्तापूर्ण ज्ञान और सूचना ही निकलती है; बनावटी खबरें नहीं निकलती। वेब पृष्ठ तो किसी के द्वारा भी बनाए जा सकते हैं; उनकी विश्वसनीयता पर भरोसा नहीं किया जा सकता क्योंकि वहाँ कोई गुणवत्ता नियन्त्रण नहीं। सूचना किस स्रोत से निकली है, कुछ कहा नहीं जा सकता। इंटरनेट कोई सुगठित स्रोत नहीं है। पर तू अपने वैज्ञानिक ज्ञान में इतिहास का आदर करते हुए शीघ्रता से इतिहास-विमुख नहीं होता – संसद की राज्यसभा की तरह। राज्य सभा में चुनाव के बाद अचानक विपरीत विचारधारा के सभी सदस्य नहीं आ जाते। पुरानी विचारधाराओं का राज्यसभा की तरह तुझमें भी अचानक हनन नहीं हो जाता।

मेरे मौसम-विभाग, मेलबोर्न के पुस्तकालय में डिजिटाइज्ड पुस्तकें भी हार्ड-कॉपी की तरह इश्यू की जाती हैं और वापस ली जाती हैं। पर यह ट्रान्सफर ओन लाइन हो जाता है। देर से वापस करने का फाइन भी देना पड़ता है। इसलिये कि ऐसी ई-पुस्तकें पुस्तकालय को लाइसेंस-समझौते के अंतर्गत ही मिलती हैं। चार प्रतियों का लाइसेंस है तो 14 लोगों को या 5 को भी इश्यू नहीं की जा सकती। यहाँ लाइब्रेरियन हमारी आवश्यकतानुसार मार्ग-निर्देशन करता है; जो आसान काम नहीं। उसका ज्ञान अद्भूत होता है। अलग अलग विषयों पर शोध करने वाले वैज्ञानिकों को मार्गदर्शन करना आसान नहीं। यहाँ बुक-स्टोर वाले का तर्क नहीं चलता कि "मैं पुस्तकें केवल बेचता हूँ; इसके बारे में कुछ नहीं जानता।" ऐसे अधिकतर पुस्तकालय तकनीकी जैसे विषय में एक ही क्षेत्र में कार्य करने वालों को मिलवाने के साधन मुहैया करवाता है। ऐसे मेकरस्पेस 3डी प्रिंटर आदि साधनों से युक्त होते हैं जिसका लाभ विशेष-रुचि-समूह के हर सदस्य को मिलता है। यहाँ की पुस्तकें इंटरनेट से अधिक सुरक्षित हैं। यहाँ साइबर धमकी या ट्रोलिंग नहीं होती।

आजकल मेलबोर्न जैसे शहरों में स्ट्रीट-पुस्तकालय का प्रचलन है। कोई उदार मकान वाला अपने मकान के आगे फ्रंट-यार्ड में कम से कम एक दो दर्जन पुस्तकों का बक्सा रख देता है। सूचना लिखी होती है कि आप कोई भी पुस्तक ले जाइये, दे जाइये या शेयर कीजिये और पढ़ने का आनंद लीजिये।

मेरे मित्र, यहाँ मेलबोर्न में केवल सिटी-लाइब्रेरी में हिन्दी पुस्तकें रखी जाती हैं और मुझे अपनी पुस्तक को पुस्तकालय में देखने से बहुत खुशी मिलती है। मैं अपनी पुस्तक 'भीग गया मन' को इस पुस्तकालय में लेकर गया और कमेटी को समर्पित की। फिर जान कर प्रसन्नता हुई कि वह सिटी-लाइब्रेरी के लिये स्वीकार कर ली गई। उसी प्रकार मैंने 'एगोनी चर्न्स मॉय हार्ट' को यहाँ की दो लाइब्रेरी में दी उसमे से चैल्टेनम लाइब्रेरी में स्वीकृत हो गई।

अब मेरे मित्र! मैं एक मनोरंजक बात बताता हू। वर्षों पहले मैं यहाँ की बेंटली लाइब्रेरी में कुछ देख रहा था। उस समय मैं आस्ट्रेलिया के एक प्रसिद्ध उपन्यासकार पीटर केरी – जिसने दो दो बुकर्स एवार्ड जीते हैं उस पर आलेख लिख रहा था। मुझे पीटर केरी के कम से कम पाँच उपन्यासों की आवश्यकता थी और वे सभी वहाँ मौजूद थे। ऐसी साहित्यिक पुस्तकें मेरे मौसम विभाग के तकनीकी और वैज्ञानिक स्तर के पुस्तकालय में कहाँ होती हैं? मैंने सोचा

’काश! मैं यहाँ का सदस्य होता तो ये पुस्तकें घर ले जाता।’ कभी कभी तो ठीक, पर बार बार यहाँ आना मुश्किल था। घर में पढ़ने की सुविधा और समय मनमर्जी के होते है। मेरे पास न तो पासपोर्ट था और न वहाँ मेरी पहचान का कोई व्यक्ति जो आनन-फानन में पहचान करा कर मुझे सदस्य बना दे। मैं डिपोज़िट देने के लिये भी तैयार था। मैंने लाइब्रेरियन से कहा: “मैं यहाँ का सदस्य बनना चाहता हूँ।“ और अपनी स्थिति बताई। उसने मुझसे ड्राइवर-लाइसेंस मांगा और कहा कि डिपोज़िट की कोई आवश्यकता नहीं। फिर कंप्यूटर पर ही मेरी ओर से फार्म भर कर लाइसेंस लौटाया और दो मिनिट में मुझे लाइबेरी का कार्ड थमा दिया जो पहचान-पत्र जैसा लग रहा था। मैं प्रसन्न होते हुये भी कार्य इतना जल्दी होता देख कर स्तब्ध रह गया। पर मुझे तो कार्ड नहीं, आज ही पाँच पुस्तकें चाहिये थी। मैंने झिझकते हुए लाइब्रेरियन से पूछा “ इस कार्ड पर मैं आज के आज अधिकतम कितनी पुस्तकें ले जा सकता हूँ?” तो लाइब्रेरियन का रूटीन स्वर में जवाब था “पचास“। मैं मारे खुशी के बल्ले बल्ले उछला पर मन ही मन।

मित्र, इस डेल्टा और ओमिक्रोन के वातावरण के बीच अपने पाठकों की सुरक्षा का ख़्याल रखना इसमें ही तेरी अपनी सुरक्षा है।

तेरा एक अकिंचन पाठक

-हरिहर झा, मेलबर्न

आस्ट्रेलिया के प्रवासी हिंदी साहित्यकार हरिहर झा मूलत: राजस्थान से हैं। हरिहर झा इंटरनेशनल सोसायटी ऑफ़ पोएट्ट्र के सदस्य हैं। साहित्य सृजन के अतिरिक्त संगीत, शतरंज और पठन-पाठन में रुचि रखते हैं।

इन्द्रधनुष
2022
Department of Local Government, Sport and Cultural Industries
Office of Multicultural Interest
SMALL GRANT

संस्कृति सीनियर्स.

संस्कृति सीनियर्स या कि फिर संस्कृति 'सीनएजर्स' कहें, सीनियर्स का एक ऐसा ज़िन्दादिल समूह है, जहाँ गीत-संगीत, कथा-कवितायेँ, गप- सड़ाका, सैर-सपाटा, स्टेज पर्फोर्मन्सेस, सभी कुछ होता है। यह ग्रुप हर रविवार को सुबह सवा दस बजे से दोपहर एक बजे तक मिलता है। स्थान है, मैनिंग सीनियर्स सेन्टर । इस सामाजिक-सांस्कृतिक ग्रुप की लोकप्रियता इतनी बढ़ चुकी है कि उनके साथ-साथ पर्थ के भारतीयों में अब मैनिंग सीनियर्स सेन्टर भी काफी लोकप्रिय हो चला है। मजे की बात यह है कि इस सेंटर और क्लब की सदस्यता शुल्क बहुत ही कम है और मज़ा बहुत ही ज्यादा।

इनका कार्यक्रम सहज है। साथ मिलकर हंसना-बैठना, घर-परिवार की बातें करना, अपनी कहना व दूसरों की सुनना, ये तो इनकी हर रविवार की गतिविधियां हैं । महीने के पहले रविवार को ये 'ब्रिंग ए प्लेट' रखते हैं और तीसरे रविवार को उस महीने में पड़े सदस्यों के सालगिरह मनाते हैं । गीत-संगीत में इनकी गहरी रूचि है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। दूतावास पर आयोजित १५ अगस्त हो या छब्बीस जनवरी, हिंदी दिवस समारोह हो या फिर हिंदी समाज का इंद्रधनुष, सभी कार्यक्रम इनके बिना सूने हैं ।

मेरी और संस्कृति सीनियर्स की पहचान पुरानी है। पर ज़रा खुल कर बता दूँ, कि मैं अभी सीनियर नहीं हुई हूँ। पर सीनियर्स के साथ जुड़ कर वॉलंटियर करने के लिए उम्र का प्रतिबन्ध नहीं है, हाँ सदस्य बनने के लिए पचपन वर्ष की आयु होना ज़रूरी है। मेरी और संस्कृति सीनियर्स की पहचान की कड़ी हिंदी भाषा और हिंदी समाज रहा है। इस साल मैंने सोचा कि क्यों न भारत-भारती के लिए मैं उनका साक्षात्कार लूँ। जब मैं गत रविवार वहां गयी तो मैंने उनसे यह सवाल पूछा कि, हिंदी समाज और संस्कृति सीनियर्स के रिश्ते को आप कैसे परिभाषित करेंगे ? किसी ने कहा कि मार्गदर्शक का रिश्ता है तो किसी ने कहा की ये एक दुसरे के पूरक हैं। दोनों संगठन साथ मिल कर प्रायः हिंदी भाषा और संस्कृति से जुड़े साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। हिंदी ही वो एक ऐसी कड़ी है जिसने दोनों संस्थाओं को जोड़ा है। एक फैक्टर और भी है, इस ग्रुप की संस्थापक और संयोजक राज्यश्री जी। इन्होंने पिछले पच्चीस सालों से हिंदी समाज में और पिछले बारह सालों में संस्कृति सीनियर्स को अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। शायद राजयश्री जी ही वो 'मैजिक पिल' हैं जो की सीनियर्स की एनर्जी का राज़ हैं।

इस संस्था से जुड़ने के लिए संपर्क करें: - राज्यश्री मालवीय - ०४०३४३४५३०

- **रश्मि लोयलका**

ख़याल फ़क़ीराना

काश कभी ऐसा हो जाए
पढ़ कर और समझ कर
सारे हथियार गिरा डुबो दें गहरे सागर में,
फिर उठा न पाए ।
काश कभी ऐसा हो जाए
पढ़ कर इंसान इतना होशियार न हो पाए
कि नए हथियार बनाए।
रहे चाहे जाहिल पर नफ़रत न कर पाए,
बदले का ख़याल भी न आए।
पढ़े न पढ़े यह कुबुद्धि मस्तिष्क में ना आए
कि उसका है मैं हथिया लूँ,
अपना राज बना लूँ,
और बढ़ा लूँ।
काश!
पर नहीं हो पाएगा इस जग में।
नई प्रकृति रचेगी तब संभवत: ।
पर अभी?
काश ऐसा कुछ हो पाता!
ख़याल फ़क़ीराना
इंसानियत को न भुलाइये फ़क़ीर,
अच्छे काम आप से
अपने-आप होते जाएंगे।

- **प्रेम माथुर**

किस्सा जो कहानी बन कर रह गया।

वर्ष 2013। एक बड़ा लोकसभा के वरिष्ठ विधायकों का दल, यहाँ की विधान सभा के बुलावे पर आया था। यहाँवाले वहाँ जाते हैं जनता करती हैं ख़र्च ।
(टैक्स लेती है सरकार उससे सरकारी खजाना भरता है, उस पैसे से।)
तो हम अपने पैसे से उनके स्वागत भोज में गए। खैर, भाषण हुए। अध्यक्ष (एक केंद्रीय मंत्री) ने हमारी (भारतीयों की) प्रशंसा की, कि हम भारतीय सँस्कृति को यहाँ सँजोये हुए हैं।

हम लोंगो को अवसर मिला प्रश्न पूछने का। जब ज़रूरतों के बयान हो चुके तो फ़क़ीर चुप न रह सका। कहा हम गर्व से कहते हैं कि हम भारतीय संस्कृति में पगे हैं। लेकिन शर्म से सिर झुका जाता है जब यहाँ के टाइम्स में पूरे पृष्ठ का लेख पढ़ते हैं जिसमें बखान होता है हमारे जनतंत्र का, जिसकी पार्लियामेंट में 40% से ऊपर विधायकों पर फ़ौजदारी अर्थात criminal मुकदमे चल रहे हैं। हम जानते हैं कि चुनाव लड़ने का अधिकार है उनका जब तक वे गुनहगार अपराधी सिद्ध नहीं हो जाते। ये भी जानते हैं कि मुकदमे चलते रहते हैं, फैसले कभी होंगे नहीं इनके ख़िलाफ़ कभी।

प्रश्न ये है कि सभी पार्टियाँ -सभी के वरिष्ठ प्रतिनिधि यहाँ उपस्थित हैं, वे क्यूँ टिकिट देती हैं
ऐसे लोगों को?
अध्यक्ष जी इसका क्या उत्तर देते? परंतु एक वरिष्ठ साँसद खड़े हुए और दहाड़ कर बोले। लेकिन लोग क्यूँ वोट देते हैं हमें?
चोर की दाढ़ी में तिनका! पर सवाल सही है! जानते बुझते मक्खी क्यूँ निगलते हैं लोग?
क्या मूर्ख हैं? क्या भेड़ें हैं जो कोई भी झंडे या डंडे वाला हाँक कर जिधर चाहे ले जाता है?
तो यह जनतंत्र व्यवस्था भी सही नहीं है। सवाल ही सवाल हैं जवाब कोई नहीं।
संसार है ये सब ऊपरवाले की माया है, हमारे कर्मों के फल है, हमारी सही शांतिप्रिय सहनशक्ति है जो महान भारत को बचाए हुए है। है न?

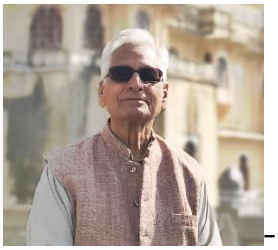

प्रेम 'फ़क़ीर'
ऑस्ट्रेलिया के दो कविता संकलनों में प्रकाशन, एवं संपादन सहयोग। कई पत्रिकाओं में कविता, कहानी, लेख प्रकाशन। 27 वर्षों से पर्थ में विविध साहित्य संगीत व सांस्कृतिक गतिविधियों में सहयोग।

lotterywest

UCMAS
EDUCATION WITH A DIFFERENCE

Belararox (BRX) is a mineral explorer focused on securing and developing resources to meet the surge in demand from the technology, battery and renewable energy markets. Our projects currently include the potential for zinc, copper, gold, silver, nickel and lead resources.

FECCA
COVID-19
SMALL GRANTS

संस्कृत भाषा और दर्शन का विकास

ऋग्वेद के रचनाकार जानते थे कि ऋग्वेद के समय में अभिजीत - ब्रह्मऋषि (VEGA in English), आकाश में 5 वां सबसे चमकीला तारा ही उत्तरी ध्रुवीय तारा था, न कि आज का पोलारिस । इसलिए ऋग्वेद के रचना तिथि में 1,500 BC कि बजाय 10,000 -12,500 BC का संशोधन हाल ही कुछ वर्षों में किया गया है । मैक्स म्युलर ने जो ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा ऑक्सफ़ोर्ड की चेयर पर स्थापित किये गए थे, हमारे इतिहास को बहुत नुकसान पहुँचाया । दुःख तो ये है की हमारे पढ़े लिखे लोग इस लपेट में आ गए और आज भी संस्कृत से अनभिज्ञ होने के कारण इसे हिन्दुत्व की साजिश समझते हैं । यह संषोध अब पुरातत्व (Archaeological), क्लाइमेट और कई अन्य वैज्ञानिक तकनीकों द्वारा निश्चित की गई है । हमारा इतिहास बहुत प्राचीन है - और 25,000 वर्ष पहले की 'आइस ऐज' के लगभग (पश्चात) शुरू हुआ होगा ।

यह बहुत महत्वपूर्ण डिस्कवरी है इसका इम्पैक्ट दुनिया के इतिहास पर पड़ता है । हमारे ही नहीं संसार भर के पूर्वज अपना इतिहास किंवदंतियों लघु कथाओं में लिखते और याददाश्त बनाये रखने के लिए उन्हें बड़ा चढ़ा कर बताते और उसका समय तारों की परिस्थिति से निर्धारित करते थे । उदाहरण: चन्द्रमा की 27 बेटियां का अर्थ सिर्फ इतना ही था कि चाँद एक दिन में 27 नक्षत्रों (Constellations) से गुजरता है । प्रजापति रोहिणी से मोहित हो उसके पीछे भागे और उसने सूर्य का आश्रय लिया तथा सूर्य ने प्रजापति का सर काट दिया अर्थात – सूर्य ने रोहिणी में उदय होना शुरू किया और ओरियन (प्रजापति) पश्चिम आकाश में डूबने लगा । कुछ इसी प्रकार ब्रह्मऋषि (Abhijit – Vega) राम को युद्ध के लिए आशीर्वाद दे रहें हैं - इतिहास का समय दर्शाते है ।

हमारे वेदों पुराणों, Epics एपिक्स (रामायण और महाभारत) में ऐसी हज़ारों तिथियों के प्रमाण मिले हैं और उनसे इतिहास एक नए सिरे से लिखा जा रहा है ।

सारांश में - ऋग्वेद 10,000 -12,500 BC के लगभग रचे गए ।

संस्कृत, वेदों की भाषा, सटीक परिभाषाओं के साथ शब्दों की शब्दावली में विस्तार करते हुए मूल जड़ों के आसपास खूबसूरती से संरचित है। संस्कृत शब्द का अर्थ ही वह है जो अच्छी तरह से गठित और एक साथ रखा गया हो। **धीरे-धीरे, भाषा ही दर्शन बन गई और व्यवहार में जीवन ।**

दर्शन के लिए संस्कृत शब्द 'दर्शन' है, जिसका शाब्दिक अर्थ है - 'देखना'। शांत मन में दर्शन वही था जो द्रष्टा ने देखा और भाषा उसकी अभिव्यक्ति थी।

'अ' - अस ('IS-AS') या अस्तित्व

संस्कृत में 'अस' का सीधा अर्थ है 'अस्तित्व' (EXISTENCE) । **'अस्ति' – 'वह जो है'** (IS, या Is-ness) मूल शब्द अस से बना । **यह 'अ' से आगे बढ़ता है जो मानव जाति का पहला अक्षर रहा होगा**। संयोजन (Conjugation) की सुविधा के लिए 'स' जोड़ा गया होगा और 'अस्तित्व' (EXISTENCE) को 'अस' के रूप में जाना जाने लगा I 'अस्तित्व' इज़-नेस है। आप है और मैं भी हूँ , यह 'अस्तित्व' है । इसी से **'स्थ'** बना ।

क्या **'स्टे'** (STAY) शब्द मूल संस्कृत शब्द **'स्थ', स्थान** इत्यादि का व्युत्पन्न है, जिसका शाब्दिक अर्थ है अपरिवर्तनीय (अस्तित्व) अचल ?

'अ' से ॐ - लंबे समय तक ध्वनि के रूप में 'अ' का उच्चारण गले तक उठता है, दिल के क्षेत्र में 'उ' बन जाता है और होंठ बंद होने पर 'म' में सब विलीन हो जाता है । 'अ', 'उ' 'म' 'यही 'अस्तित्व' की अभिव्यक्ति बन जाती है – संसार, भाषा सब कुछ । इन्हीं तीन शब्दों में सम्पूर्ण भाषा ही नहीं सृष्टि निहित है ।

इस प्रकार, 'अ', 'उ' 'म' (A...U...M - संक्षेप में - OM) को 'अस्तित्व' की अभिव्यक्ति (manifestation) के रूप में मानने लगे।

ओम एक पवित्र शब्द बन गया, जो 'अ ' में शुरू होने से लेकर 'म' में इसके विघटन तक 'अस्तित्व' को भौतिक रूप से प्रकट करने वाली हर चीज का प्रतिनिधित्व करने लगा । इस प्रकार ओम संपूर्ण अभिव्यक्ति का सिंबल (Symbol) बन गया।

ॐ ('अ' और 'म') से अहम की यात्रा या विकास शायद इतना सीधा नहीं है फिर भी कुछ ताल मेल अवश्य प्रतीत होता है । संस्कृत में संयोजक (स) को विसर्ग (:) अथवा 'ह' के रूप में भी जाना जाता है । 'म' वाकई विलीन होता है या पश्चात 'म' से गूंजने वाली गुंजन, आवाजें – मन, मति, मत इत्यादि बन जाते हैं ।

जाने कब अपने अस्तित्व की पहचान को 'अहम' के रूप में जाना गया लेकिन संस्कृत भाषा में अस्मत (अ स मत) का उल्लेख - 'इस (सृष्टि) से (from this (Universe)) - बहुत जगह हुआ है । और इतना भी स्पष्ट है कि धीरे, धीरे दार्शनिकों ने अहम को 'अस्तित्व' की भावना के रूप में या मैं, मैं, मैं, के रूप में स्वीकार किया और इसे प्रत्येक वस्तु तथा जीव में पहचान लिया। इस प्रकार पूरे ब्रह्मांड को इस अहम भावना को , ब्रह्मांड में विस्तृत देखा । क्या परमाणु और अणु और ब्रह्मांड का सबसे छोटा कण भी स्वयं के अंदर ज्ञान - आई-नेस की भावना के बिना कार्य कर सकता है? बिल्कुल नहीं। क्या गुरुत्वाकर्षण या चुंबक त्व (Gravity or Magnetism) या तरंग गति काम कर सकती है, या जल प्रवाह (Water flow) और वाष्प (Vapour) अहम (I-ness) की भावना के बिना उठ सकते हैं? नहीं। कतई नहीं ।

यह अहम सभी प्राणियों में तथा अ-जीव (जिनमें प्राण न हों, पत्थर इत्यादि) वस्तुओं में भी है । इस सामान्य 'अहम्' को सर्वव्यापक ब्र-अहम के 'रूप' में बोला गया होगा । ब्र:, संस्कृत मूल शब्द (**Expanded, Great**) सर्वव्यापी।

इस प्रकार, I, I, I (मैं, मैं, मैं) सर्वव्यापी ब्रह्म (ब्र-अहम) के रूप में बोला जाने लगा - **और ब्रह्म अस्तित्व की कुल अभिव्यक्ति का आधार, ॐ का आधार – तुरी-या - ॐ (अ उ म) का चौथा मिसिंग लेटर (Silence that surrounds all three from which all these arise) । यही चेतना है, ब्रह्म है, सर्वव्यापी है और सबका आधार भी**, और हर चीज में जानने का सिद्धांत, अंतिम विषय जो ब्रह्मांड में व्याप्त है, हमारे रोम, रोम में व चारों तरफ व्याप्त है ।

हर व्यक्ति, हर प्राणी में 'मैं' बराबर मौजूद है। मैं सर्वव्यापी है, तो ब्रह्म उसका आधार है ।

वेदों के समय में, भारतीय उप महाद्वीप के लोगों के लिए 'ज्ञान ही जीवन का आधार था । उन्होंने इसे स्पष्ट रूप से समझा और सभी में 'जानने' के सिद्धांत को (आत्मा – स्व - SELF) कहा।

आत्मा शब्द और ग्रीक शब्द एटम के बीच निकटता पर भी ध्यान दें, जिसका अर्थ समान ही है, पदार्थ का अविभाज्य मूल रूप । लगभग 400 BC में डेमोक्रिटस ने भी इसे गड़ा और लोकप्रिय बनाया ।

कणाद ऋषि (शाब्दिक रूप से अनुवादित - कण भक्षक), के 'वैशिषिक' दर्शन (Vaisheshika Philosophy) ने न केवल परमाणु की धारणा बल्कि न्यूटन के बल के नियमों (First and Second Laws of Motion) का भी अनुमान लगाया । वे चार वेदों में ऋग्वेद के दार्शनिक हैं।

इस प्रकार आत्मा, और आत्मा को पदार्थ सहित हर चीज के पीछे देखा गया।

क्या बिना जाने कोई रचना हो सकती है?

क्या 'कुछ भी नहीं है' (EMPTINESS) से कुछ भी बनाया जा सकता है?

सृजन अनिवार्य रूप से पुनरावृत्ति ही है (Creation is essentially Recycling) ।
अहंकार इस प्रकार निर्माता के रूप में भी जाना जाने लगा होगा । Brahma thus came to be understood as the Creator । खुद अपनी ही पुनरावृत्ति । हर रूप में सब ब्रह्म ही ब्रह्म है ।

आत्मा प्राणियों (Sentient) में चैतन्य (Consciousness) है । अचेतन (Insentient) और प्रकृति के तत्वों में, यह एक कानून है जो ज्ञान से वार्तालाप (Interaction) को नियंत्रित करता है, चाहे ऐसी बातचीत गुरुत्वाकर्षण या चुंबक त्व या विद्युत या पदार्थ की किसी भी 'संपत्ति' के रूप में व्यक्त करती है।

इस प्रकार, भाषा और दर्शन के साथ-साथ विज्ञान भी 8,000 साल से भी पहले भारत में आकार ले रहे थे।

आत्मा हम सब का सत्य स्वरूप है । आत्मा ही ब्रह्म है , ॐ भी और ॐ का आधार भी , अस्तित्व भी । यह अस्तित्व का मूल है। यह सत्य है क्योंकि अस्तित्व अपरिवर्तनीय है।

यही आनंद है । आत्मा - अहम् - ब्रह्म - सत-चित-आनंद - सच्चिदानंद ही है ऐसी सोच का विकास हुआ होगा । इस तरह उप-महाद्वीप के दार्शनिकों ने 'अस्तित्व' और अस्तित्व में निहित सिद्धांत की धारणा को समझा और अब भी करते हैं।

इसकी अभिव्यक्ति 'जानना' है, इसका रूप 'ज्ञान' है और इसकी क्रियात्मक शक्ति इच्छा और बुद्धि है । Its powers are 'Will and Intelligence'.

हजारों देवताओं और प्रार्थना के साधनों के पीछे, इसके मूल सनातन धर्म या हिंदू धर्म जिसे आज कहा जाता है, नहीं बदला है। इसकी प्रथाएं अलग-अलग समझ वाले लोगों में अलग-अलग होती हैं, लेकिन शिक्षक, भिक्षुओं के चार आदेश अभी भी एक ही संदेश पढ़ाते हैं।

फर्क सिर्फ इतना है: अपने आप में आनंद से आनंदित होना, 'मैं' व्यक्तिगत से सार्वभौमिक (UNIVERSAL) आई-नेस - अहम् ब्रह्मास्मि (Aham Brhmasmi) तक विस्तार करना ।

जानने से ज्ञान की उत्पत्ति होती है और ज्ञान से ही सभी क्रियाओं का जन्म होता है । और इसलिए ब्रह्मा को निर्माता के रूप में जाना जाने लगा। क्योंकि सब कुछ बनाया, विचारों से सब कुछ सामग्री, वास्तव में ब्रह्मांड में ग्रहों से सितारों तक, सितारों से ब्लैक होल और फोटॉन से नए ब्रह्मांड तक सब कुछ लगातार बदल रहा है, Mass and Energy are constantly interchanging. Nothing is added or taken away । अस्तित्व अपरिवर्तित (EXISTENCE IS UNCHANGING) रहता है - कुछ भी जोड़ा नहीं जाता है, और कुछ भी नहीं हटाया जाता।

इसे सनातन धर्म के रूप में जाना जाने लगा - वह शाश्वत नियम जो अभिव्यक्ति को बनाए रखता है।

धर्म, आ-स्ति-क, व ना-स्तिक क्या हैं ?

'धर्म' 'धरती' या 'पृथ्वी' का मूल शब्द धरा ही है । 'वह जो कायम है' । वह जो सब कुछ धारण करता है (That which Sustains, Preserves) ।

अस्तित्व स्वतः स्पष्ट है और सब कुछ अस्तित्व के 'सार' की अभिव्यक्ति है। Existence is self-evident and everything is a manifestation of the essence of Existence.

दार्शनिकों ने लगभग 8000-10,000 साल पहले, उपनिषदों, और गहन चिंतन के ज्ञान में इसे **स्पष्ट** देखा अनुभव किया और इसे व्यक्त किया।

जो लोग 'अस्तित्व' में विश्वास करते थे, वे विश्वासी (आ-स्ति-क) बन गए और जो अस्तित्व में विश्वास नहीं करते थे (और तर्क दिया कि यह सब खालीपन (एक तरह के 'मौन' से आया है, वे गैर-आस्तिक (नास्तिक) बन गए।

उप-महाद्वीप एक अलग द्वीप नहीं था। लोगों ने व्यापार किया, बुद्धिमान पुरुषों और महिलाओं, भिक्षुओं ने विशेष रूप से दूर-दूर की यात्रा की और बातचीत की। तब तक शायद सुमेरियन, मिस्र, बेबीलोन और ग्रीक अधिकतर संघटित भी नहीं थे ।

भाषा का हेर फेर - (खुद और खुदा - अहम् और ब्रह्म)

बहुत संभव है कि सेमाइट्ट लोगों (Semites - Jews, Christians and Muslims) का 'अब्राहम' (Originally Abram later Abraham) ब्रह्म से आया है, क्योंकि सेमाइट्ट ब्रह्म का उच्चारण बिना ए को जोड़े नहीं कर सकते थे, जैसा कि उन्होंने प्लेटो, असली नाम Plato (n) के लिए किया था । अरबों की शब्दावली

में P नहीं होता है और जब भी कोई जटिल अक्षर हो तो उसके पहले 'A' जोड़ते हैं । जैसे प्लेटो (न) अ-पलातून से अ-फ(प)लातून बन गए, कुछ इसी प्रकार ब्रह्म अ-ब्रहम । Plato (n) is called Aflatoon in Arabic. They have to add 'A' and use 'F' instead of 'P'. Similarly, Brahma must have become A-bram to Abraham ।

कुछ इसी तरह, यहूदियों के लिए परमेश्वर शब्द एल-अहिम बहुत संभव है (El Aham) से बना होगा । **एल (El) को अक्षरों के संयोजन से जोड़ना व्यक्तित्व में 'सम्मान और शक्ति' दर्शाता है**। El अहम् - एल (El-ahim) बाद में एलोहा (Eloha) बन गए और जैसे-जैसे समय बीतता गया पैगंबर मुहम्मद के जन्म से बहुत पहले यहूदियों का एलोहीम (El-ohim) अरबियों के Eloha, इलाही और अल्लाह बन गए । **अलैहिम से अल्लाह का व्युत्पन्न तो वहां के दार्शनिक भी विश्वास करते हैं ।**

लोग बहुत जल्दी अस्तित्व और शून्यता के बारे में भूल गए, जो आस्तिक और नास्तिक दार्शनिकों के मूल विवाद थे, और मान्यताएं गहरी खाईंयों में बदल गयी ।

भगवान हमारे साथ खेल खेलने वाला कोई कठपुतली नचाने वाला मैजिशियन नहीं है। चेतना हमारा आधार है और हमारी सोच ही निर्माता ।

अहम, ब्रह्मा, इब्राहीम, अहम से एल-अहम, एलाह, अल्लाह, और तो और बुद्ध जिसका सीधा साधा अर्थ ज्ञाता है हमारे भगवान और नास्तिकों के आदर्श पुरुष बन गए । **आप नास्तिक हों या आस्तिक, जब हमारा मूल रूप ज्ञान ही है तो कौन आस्तिक और कौन नास्तिक** । चेतना और ज्ञान ही हमारे मूल सिद्धांत हैं । इस ब्रह्मांड में ज्ञान सिद्धांत से सभी क्रियाएं निकलती हैं, **अच्छा या बुरा इस पर निर्भर करता है कि हम अपनी सार्वभौमिकता (Universality) से कितनी दूर, कितने स्वार्थी और विस्मृत हैं, भूल चुके हैं ।**

जितना ही मन शांत है उतना ही ज्ञान विस्तृत होगा, उतना ही सार्वभौमिक (UNIVERSAL) ।

एक अवधि के दौरान इन तत्वों को विभाजित किया गया था

- मृत्यु व नया जीवन (Dissolution and Renewal)- शिव शुभ
- परिरक्षण (Preserver) - विष्णु (वि-श-अनु)।

ज्ञान, आत्म-प्रयास, अनुशासन और दया - (विष्णु- Preserver) के सिद्धांत थे। इन सिद्धांतों की, सर्व व्यापक (Vi) और नेक इरादे (iSh) और प्रकृति के हर कण (Anu-अनु) - विष्णु के रूप में पूजा की जाने लगी।

मृत्यु और परिवर्तन की अनिवार्यता को शुभ माना जाता था और आज तक शिव को 'परिवर्तन अपरिहार्य', (Change is Inevitable) 'शुभ' और 'फायदेमंद' माना जाता है।

लोगों ने प्रकृति के तत्वों से दयालु होने की प्रार्थना भी हमेशा की है । अन्य सभी देवी-देवताओं की पूजा की जाती है, जो विष्णु या शिव के विभिन्न पहलू हैं, प्रत्येक की अर्धांगिनी समकक्ष उसी की इच्छा और शक्ति के रूप में।

हम सभी (सार्वभौमिक रूप) में विष्णु का मूल सिद्धांत 'अच्छे इरादे' है और जो हमेशा 'अच्छे इरादों' के लिए प्रतिबद्ध है, वही हम में ईश्वर है 'ईश' (अच्छे इरादे + वर (wedded to) – ईश्वर ।

अच्छे इरादों (ईश) के साथ काम करने वाला (क्र - काम करने के लिए मूल शब्द) विष्णु का अवतार **(क्र-ईश-न)** बन गये । जो सर्वे रमन्ति इति के सौन्दर्य और आनंद में आनंदित होता है, जो सभी में रहता है - संक्षेप में राम बन गये । राम, महाकाव्य रामायण के योद्धा राजकुमार, जिन्होंने जीवन की सभी परिस्थितियों में आनंद और सार्वभौमिकता की भावना को बनाए रखा। उनकी पूजा उसी के रूप में की जाने लगी, जो हम सभी में प्रकट होती है। श्री राम स्वयं आदर्श बन गए और जीवन के सतत सिद्धांत - विष्णु के अवतार के रूप में प्रतिष्ठित हो गए।

प्रार्थनाओं में इस पुरानी सभ्यता के ज्ञान से जन्मे या संलग्न प्रत्येक भारतीय को हमेशा अपने भीतर ऐसे गुणों को खोजने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जो जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं और यज्ञ की भावना में सार्वभौमिकता के सिद्धांत के प्रति समर्पण और बलिदान करते हैं - क्योंकि ज्ञान और ज्ञान से पैदा हुए कार्य ब्रह्मांड एक 'टीम' विशेषता (Teamwork) है, 'अस्तित्व' - स्वयं है । व्यक्तिगत योगदान है लेकिन योगदान का अहंकार नहीं (मैं और मेरा) कुछ नहीं ।

यह प्रकृति का शाश्वत नियम है जो 'अस्तित्व' की पूजा करता है, उसमें मैं और मेरा कहाँ?

यह एक विश्वास प्रणाली नहीं है जो भय और लाचारी में बनी हुई है या खुद को पाप में पैदा होने और छुटकारे की प्रतीक्षा में मानती है। **मेरा एकमात्र पाप यह है कि मैं अपनी प्राचीन स्थिति 'कि मैं अस्तित्व और अंतर्दृष्टि हूं' भूल गया हूं, न कि इस सीमित शरीर, मन और सीमित बुद्धि को जिसे मैं 'खुद' कहता हूं। खुद, खुदा से अलग नहीं है, तथा अल्लाह और ब्रह्म पर्यायवाची शब्द हैं । विश्वासियों और गैर-विश्वासियों (Believers and non-believers) के बीच के अंतर गहरे चिंतन में लुप्त हो जाते हैं।** 'मैं अस्तित्व में हूं - क्योंकि मैं जानता हूं' - दर्शन की भाषा में विश्वासियों का आदर्श वाक्यांश है।

जो यह मानते थे कि 'मैं नहीं हूं' लेकिन मेरा अस्तित्व दूसरों के संबंध में केवल एक सापेक्ष अनुभव है - अविश्वासी बन गए। **अंत में ये भेद निर्वाण की स्थिति में पारलौकिक मौन (Transcendental Silence) के अनुभव में गायब हो जाते हैं । हिंदुओं, बौद्धों, जैनियों, ईसाइयों, सिखों और इस्लाम और नॉन बलिवेर्स के सभी बुद्धिमान पुरुषों और महिलाओं की भाषा भले थोड़ी अलग भी रही हो तो भी अनुभव अलग नहीं हैं । यही संस्कृत है और संस्कृति भी, भाषा, दर्शन और धर्म भी ।**

हम इसे प्रेम, ज्ञान, मौन या नैतिकता और सार्वभौमिकता की नैतिकता कह सकते हैं ।

बुद्धि सार्वभौमिकता को गले लगाती है ।

चेतन ही ब्रह्म है और सर्व व्यापी है; शिव 'परिवर्तन' है - अपरिहार्य' है 'शुभ' और 'फायदेमंद है; विष्णु का मूल सिद्धांत परिरक्षण है; जो 'अच्छे इरादों' के लिए प्रतिबद्ध है, वही हम में ईश्वर (ईश + वर) है । व्यक्तिगत योगदान है लेकिन योगदान का अहंकार नहीं (मैं और मेरा) कुछ नहीं ।

अस्तित्व (Existence – 'I' exists and will always exist) स्वतः स्पष्ट है, इसको अस्वीकार करना स्वयं को अस्वीकार करने के बराबर है ।

शंकर मदान

१९७१ से पर्थ में सपरिवार रह रहा हूँ । कभी ऐसा नहीं सोचा कि कुछ लिखूं । माता पिता ने प्रार्थना की तरफ तो डाल ही दिया था । फिर पर्थ के मंदिर बनाने में थोड़ा बहुत योगदान करते करते साधुओं का सानिध्य व आशीर्वाद भी प्राप्त हुआ जिन सबका मैं जीवन भर आभारी हूँ ।

रबीन्द्रनाथ टैगोर के अनमोल वचन

- प्रसन्न रहना बहुत सरल है, लेकिन सरल होना बहुत कठिन है।
- तथ्य कई हैं, लेकिन सच एक ही है।
- प्रत्येक शिशु यह संदेश लेकर आता है कि ईश्वर अभी मनुष्यों से निराश नहीं हुआ है।
- विश्वास वह पक्षी है जो प्रभात के पूर्व अंधकार में ही प्रकाश का अनुभव करता है और गाने लगता है।
- फूल एकत्रित करने के लिए ठहर मत जाओ। आगे बढ़े चलो, तुम्हारे पथ में फूल निरंतर खिलते रहेंगे।
- चंद्रमा अपना प्रकाश संपूर्ण आकाश में फैलाता है परंतु अपना कलंक अपने ही पास रखता है।
- कलाकार प्रकृति का प्रेमी है अत: वह उसका दास भी है और स्वामी भी।

कलम दवात

हिंदी समाज ऑफ वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया ने जून 2020 में कलम दवात की शुरुआत की। इस कार्यक्रम का लक्ष्य हिंदी लेखन में रूचि रखने वाले सभी सदस्यों को एक प्लेटफार्म प्रदान करना था। कार्यक्रम की शुरुआत से ही हमें कई लोगों का समर्थन मिला और देखते ही देखते यह एक बहुत ही पापुलर कार्यक्रम बन गया। कलम दवात के शुरुआती सत्रों में हमने हिंदी भाषा की अलग-अलग विधाओं पर लेखन किया। इनमें से कुछ विधाएं जैसे कि निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, लघु कथा, हास्य-व्यंग, रिपोर्ताज पर आधारित बहुत ही अलग-अलग शैली की और अलग विषयों पर रचनाएं पढ़ने को मिली। जैसे-जैसे हमारे सदस्य विभिन्न विधाओं से परिचित होते गए और उनकी लेखन क्षमता मजबूत होती गई, वैसे ही उनकी रचनात्मकता का निखार उनकी लिखी रचनाओं में नजर आने लगा।

कलम दवात से जुड़ने वाले सदस्यों में कई लोग ऐसे थे, जो बखूबी लिख रहे थे। और कुछ ऐसे भी थे जो पहले कभी लिखते थे, लेकिन अब कई सालों से उनका कलम या कागज से नाता टूट चुका था। वहीं कुछ सदस्य ऐसे भी थे, जिनके मन में यह भावना थी कि हम लिख सकते हैं, लेकिन उन लोगों ने कभी लिखा नहीं था। तो ऐसी सभी बाधाओं और आशंकाओं को पार करते हुए, हमने सभी को एक नई शुरुआत के हिसाब से, इस कार्यक्रम में या इस पहल में शामिल होने का न्योता दिया और सच पूछिए, तो सबके लिए बस एक मौका ही काफी था।

आइए देखते हैं कलम दवात के एक सत्र की झलक:

२०२१ जून माह की यह कलम दवात हमारी पहली वर्षगाँठ थी। जून २०२० में कलम दवात का पहला सत्र हुआ था और देखते ही देखते एक साल बीत गया । कई नए लेखक और लेखन में रुचि रखने वाले लोग इस कार्यक्रम से जुड़े और साथ ही इस एक वर्ष के अंतराल में कलम दवात की मासिक बैठकों के दौरान कई अच्छी रचनाएं लिखी गई । जून २०२१ की इस बैठक के दिन ही कोविड की वजह से पर्थ में एक लॉक डाउन की शुरुआत होने वाली थी और साथ ही मौसम भी कुछ आँख-मिचोली खेल रहा था। लेकिन संयोग देखिए कि इस वार्षिक बैठक में १० सदस्य मैनिंग सीनियर सिटीजन सेंटर की लाइब्रेरी में आ पहुँचे । कार्यक्रम की शुरुआत हुई कलम दवात के व्हाट्सएप ग्रुप में पिछले कुछ दिनों से चल रही रचनाओं से। एक रचना अकस्मात ही चुनी गई, जिसका जुड़ाव था दिल से और कार्यक्रम की शुरुआत में हर एक सदस्य को पिछले सदस्य द्वारा सुनाई गई पंक्तियों से जुड़ी कोई बात गद्य या पद्य में कहकर उसको आगे बढ़ाना था। बहुत ही रोचक वार्तालाप रहा, कहीं दिल टूटे कई दिल जुड़े और कुछ रिश्ते भी कड़ी परीक्षा से गुजर गए मात्र 10 मिनट में।

प्रारंभिक दौर के वार्तालाप के दौरान ही हमें हमारे इस कलम दवात के सत्र का विषय मिला। विषय था "जीवन में सोच का महत्व" और फिर क्या था, सभी सदस्य एकदम सावधानीपूर्वक एकाग्रता से इस विषय पर अपना लेख लिखने में जुट गए। वह २० मिनट कैसे गुजर गए, पता ही नहीं चला। उत्सुकता थी सभी के बारे में जानने की, कि इस विषय पर उनकी क्या सोच है? तो लीजिए यह रहे उन सोचों के कुछ नमूने।

शरद शर्मा जी कहते हैं: “तन मन धन के बीच में मन ही अपना सब से बड़ा दुश्मन है, और मन ही देता है ग़म। तन और धन से जो मिलती हैं ख़ुशियाँ, उनको मन ख़ामखां दुख में बदल देता है, आदमी को ज़रूरत से ज्यादा सोच में डाल देता है । और सोच एक बीमारी है ।“

प्रेम माथुर जी कहते हैं : “मानव के पास एक सोच यंत्र है - मिला है प्रकृति से, पर हर आदमी के पास अपना है। उसका प्रोगरामिंग कैसे होता है वह संयोग की बात है। फिर सोचना शुरू हो जाता है। तब सोच यंत्र खोज यंत्र भी बन जाता है - अनगिनत सवाल उठते हैं। “

राज्यश्री जी ने कहा: “सोचती हूँ कि सोच कर क्या करूं? यह सोच एक ऐसी चीज है कि जो बिना सोचे समझे ही आती रहती है। सोच सोच के सोच रही हूं कि जीवन में सोच का बहुत महत्व है।

सुरेश दिनकर जी कहते हैं: “जीवन एक जटिल उलझन है इस उलझन को सुलझाते रहना ही जीवन की गतिशीलता है । संदेश यही है कि जीवन को चिंतन पूर्ण और चिंता विहीन बनाना सुनिश्चित करें और आजीवन प्रसन्न रहें।“

श्याम कृष्ण सक्सेना जी कहते हैं: “सोच जीवन का अभिन्न अंग है, सोच के बिना जीवन सार्थक नहीं है।“

आशा सक्सेना जी कहती हैं: “जो लोग भी अपनी जिंदगी में कुछ बने हैं वह इसी सोच के कारण। जीवन बिना सोच के ठहरा हुआ सा हो जाता है।“

शंकर मदान जी लिखते हैं: “अपनी सोच से ही मनुष्य सत्य बड़ा है अब सभ्यता नहीं हमें पैसे काफी हद तक मुक्त किया है लेकिन विकल्प में सबसे भयंकर भय मृत्यु का ही है और इस पर हमारा कुछ भी अधिकार नहीं है।“

अनुराग सक्सेना जी कहते हैं : “जीवन में सोच का महत्व वैसा ही है जैसे बिना वायु के प्राण। बिना सोच के मानव जाति का कल्याण या उद्विकास (इवोल्यूशन) असंभव था, अगर यह सोच ना होती तो यह जीवन ना होता।“

अनूप मालवीय जी कहते हैं: “मैं सोचता हूं इसीलिए हूँ, यह मेरे वचन नहीं, कांत और यजुर्वेद के विचार है। मैं हूँ या नहीं, मैं सोचता हूँ और अपने आप को संज्ञा प्रदान करता हूँ । फिर विशेषणों को ऊपर से लादकर अपने अहम की उत्पत्ति करता हूँ फिर बन जाता है वाक्य “मैं भी कुछ हूँ” ।“

कुशल कुशलेंद्र कहते हैं: “एक सकारात्मक सोच रचनात्मक और क्रियात्मक जीवन का निर्माण करती है वहीं एक नकारात्मक सोच जीवन को जटिल और पीड़ा पूर्ण बना देती है । हमारा वातावरण और आसपास का माहौल हमारे विचारों को परिवर्तित करता है लेकिन अगर हमारे विचारों में द्रढ़ता और हमारे मस्तिष्क में एकाग्रता हो तो हम हमारे वातावरण को भी प्रभावित कर सकते हैं।“

आशा है आप सभी को इन विचार पूर्ण लेखों से कुछ ऊर्जा मिलेगी जो आपके हिंदी लेखन को बढ़ावा देगी ।

- **कुशल कुशलेंद्र**

चन्दा

चन्दा की साड़ी हमेशा लटकती रहती थी और हम सभी बच्चे उसकी साड़ी खींच कर भाग जाते थे । चन्दा हम बच्चों से उम्र में बड़ी थीं पर उसकी हरकतें एक बच्चे जैसी ही थी। चन्दा को देख कर बड़ी अचंभित रहती थी मैं । निकले हुए दांत, जोर जोर से हँसना और हँसते वक्त दांतों को और भी बाहर निकाल लेना मुँह को टेढ़ा बनान, यह सब वो करती रहती थी। उसका मुँह थोड़ा शायद टेढ़ा ही था। फूफाजी को हर वक्त चन्दा के लिए चिंतित ही देखा था और उससे भी ज्यादा चिंता कि उसका ब्याह कैसे होगा या फिर उनके बाद उसका क्या होगा। वो अक्सर कहते बुढ़ापे की संतान है ऐसी ही होनी थी । पर यह सब हम बच्चों की समझ के बाहर था । वो जब भी बड़ी बुआजी एवं फूफाजी के साथ आती तो हम बच्चे उसे छेड़ने लग जाते और वो दांत निकाल कर जोर जोर से हँसती रहती। चन्दा हमारे साथ गुड्डे गुड्डी का खेल खेलती, वो हमारे साथ गीली डंडा, बैट बॉल लुका छुपी सभी तरह के खेल खेला करती थी।

धीरे धीरे समय निकलता गया हम सभी बच्चों ने धीरे धीरे बचपन छोड़ा और योवन की दहलीज पर कदम रखा पर चन्दा नहीं बदली। मेरे भाई बहनों का धीरे धीरे ब्याह भी हो गया पर चन्दा का नहीं हुआ। अब मुझे समझ आ गया था कि चन्दा ऐसी ही है और वो हमेशा ऐसी ही रहेगी। मुझे लगा चन्दा बस यूं ही हंसने के लिए ही बनी है। जिसकी शादी नहीं होती है वो लोग हँसते रहते हैं। खुश रहती थी चन्दा।

एक दिन पता लगा कि चन्दा का ब्याह तय हो गया है। घर में सभी की खुस पुसाहट शुरू हो गई थी। चाचा कह रहे थे कि फूफाजी ने कितना सारा पैसा देकर एक जंवाई पसंद किया है। उसे वो एक कपड़ों की दुकान भी करवा देंगें। चलो अच्छा है अगर कुछ भी कर के चन्दा बस जाए अपने घर। चाची माँ कह रही थी कि फूफाजी ने यह अच्छा नहीं किया। चन्दा टिक जाए तो है।

चलो कुछ भी कर के ब्याह तो हुआ पर दो दिन बाद ही घर में शोर मचा था। चन्दा भाग गई, चन्दा भाग गई। रात तक चन्दा घर वापस लौटी ऐसी लूटी हुई, बिखरे बाल, लटकती साड़ी और भूखी प्यासी चन्दा। उसे देख फूफाजी की जान में जान आई । चन्दा को वो गले लगा रोने लगे पर चन्दा तो चन्दा, सदा की तरह हँसती रही।

फूफाजी अपने जंवाई अशोक बाबू को मना कर चन्दा को उनके पास छोड़ कर आए। चन्दा दहाड़े मार मार कर रो रही थी। मुझे उस घर नहीं जाना पर फूफाजी नहीं माने। कहने लगे बेटी को घर नहीं बैठा सकते। चन्दा को छोड़ लौट आए फूफाजी। पर यह सिलसिला चलता रहा। चन्दा भाग आती और फूफाजी अपने जंवाई बाबू को कुछ धन दे कर चन्दा को ससुराल छोड़ आते। फूफाजी को पूरा पूरा अंदाजा था कि अशोक बाबू ने पैसों के लालच में चन्दा से ब्याह किया है। लेकिन क्या करें बेचारे फूफाजी भी बेटी को घर जो नहीं रख सकते थे। अब तो अशोक बाबू ने दूसरा ब्याह भी कर लिया था। सबसे कहते फिरते चन्दा औरत कहलाने के लायक नहीं है। चन्दा बिचारी से दिनभर दोनों पति पत्नी मार पीट किया करते। बुआ जी इसी दुख में चल बसी।

फूफाजी अब तक थक चुके थे और चिंता में घुले जा रहे थे। उन्हें अक्सर यह कहते सुना था की पता नहीं कौन से जनम का बदला लेने आई है यह चन्दा। पर है तो मेरी बच्ची मेरे बाद इसका क्या होगा। किस तरह जिएगी यह। इस तरह घुलते घुलते फूफाजी एक दिन चल बसे। उसी दिन जब फूफाजी गुजरे चन्दा भी हमेशा की तरह अपना घर छोड़ भाग कर आ रही थी और रास्ते में एक्सीडेंट हो गया और फूफाजी के साथ साथ चन्दा भी चल बसी।

- **संगीता बंसल**

हिंदी कवितायेँ और लघु आलेख लिखने के अलावा हिंदी रेडियो में समय समय पर कार्यक्रम प्रस्तुत करना, विभिन्न सामाजिक संस्थाओं में स्वयंसेवक की तरह कार्यरत और पारिवारिक व्यवसाय में सम्मिलित

आज़ादी का अमृत महोत्सव – पोस्टर प्रतियोगिता

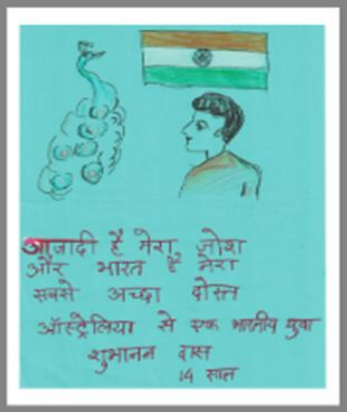

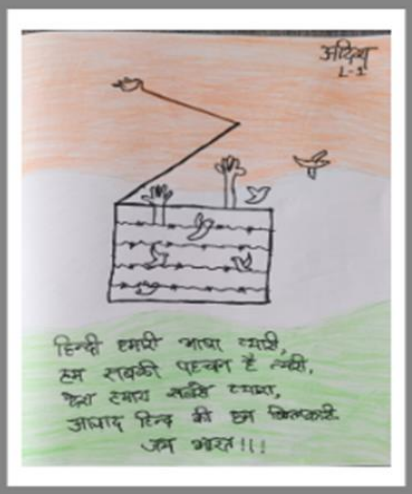

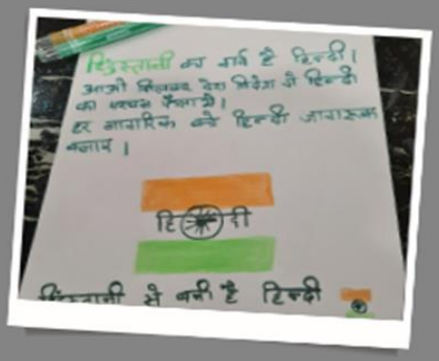

पोस्टर और स्लोगन लेखन प्रतियोगिता के विजेता

पहली श्रेणी- याना गुप्ता और आदिश श्रीवास्तव
दूसरी श्रेणी-शैलजा कुमारी और गरिमा वार्ष्णेय
तीसरी श्रेणी-आयुष कुलश्रेष्ठ और देवानन दास

WINNERS

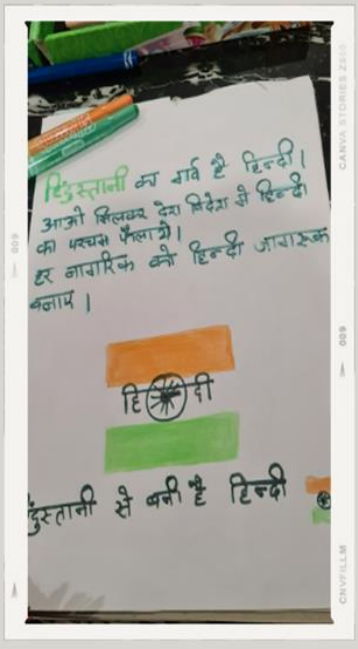

यात्रा संस्मरण - मेरी पहली हवाई यात्रा

1970 के दशक में हवाई यात्रा साधारण जन के लिये एक स्वप्न हुआ करता था और वह भी मुफ्त की हो तो उस पर सोने पे सुहागा । इसी संदर्भ में 1976 में भारत सरकार की ओर से पूर्वी अफ्रीकी देश तंज़ानिया में प्रतिनियुक्ती पर जाने का प्रस्ताव प्राप्त हुआ ।

एक अफ्रीकी देश के नाम से विभिन्न प्रकार की शंकाओं ने जन्म लिया और उनके निवारण के लिये अलग-अलग सूत्रों से जानकारी लेने का प्रयास किया । उस समय साधन एवं संचार व्यवस्था इतनी तीव्र गति की नहीं थी । लेकिन भाग्यवश एक परिचित के बड़े भाई श्रीवास्तवजी तंज़ानिया के कृषि मंत्रालय में कार्यरत थे । उनसे सारी जानकारी प्राप्त की और संतुष्ट होकर जाने का मन बना लिया । केवल दो वर्ष के लिये प्रतिनियुक्ती थी, अतः फौरन स्वीकृति भेज दी । कुछ समय के अंतराल पर पूर्व भुगतान टिकट PTA सूचना कानपुर के भारतीय विमान IA सेवा के कानपुर कार्यालय में आ गई क्योंकि उन दिनों मेरी नियुक्ति कानपुर में थी । यात्रा कार्यक्रम कानपुर से दिल्ली, दिल्ली से बंबई, बंबई से नैरोबी, नैरोबी से दार-ए-सलाम था । टिकट में कुछ त्रुटि होने के कारण कानपुर कार्यालय के अधीक्षक माथुरजी ने सलाह दी की पहले मैं अकेला चला जाऊँ, वहाँ जाकर बाद में परिवार चला जाएगा । इस अंतराल में वहाँ के बारे में और जानने का भी अवसर प्राप्त हो जाएगा ।

मेरी स्वीकृति पाने के बाद फौरन उन्होंने टिकट बना दिया । पूरी यात्रा चार खंडों में थी । इनमें से तीन खंडों की तो तुरंत पुष्टि हो गई, परंतु दिल्ली से बंबई खंड की पुष्टि नहीं हो पाई । संचार की अव्यवस्था के कारण यह सुझाया गया कि यहाँ से चले जाए और दिल्ली पहुँचने पर बंबई जाने की व्यवस्था हो जाएगी ।

सलाह मानकर हम कानपुर से दिल्ली के लिये चले । संबंधियों एवं सहयोगियों ने बड़ी धूम-धाम से विदा किया । हम प्रसन्न थे परंतु आने वाले तूफान का एहसास नहीं था । दिल्ली पहुँचने पर जब बंबई की उड़ान का समय आया तो न जाने कहाँ से भीड़ उमड़ पड़ी । उड़ान पूरी तरह से सवारियों से भर गई और बताया गया कि मेरे आरक्षण की पुष्टि नहीं हो पाई ।

भाग्यवश हमारे एक निकट सम्बन्धी हमसे मिलने आये थे, उन्होंने कहा कि हम उनके यहाँ रात बिताये और अगले दिन विमान सेवा कार्यालय जाकर दूसरी व्यवस्था करेंगे । रात उनके घर बिताई और अगले दिन सुबह कनॉट प्लेस के कार्यालय में जाकर दूसरा टिकट जारी करवाया जिसके सारे खंडों की पुष्टि थी ।

दोपहर में दिल्ली से चलकर बंबई पहुंचे । वहाँ पर होटल में ठहरने की व्यवस्था विमान सेवा की ओर से थी । होटल में रात बिता कर सुबह होटल से चलकर बंबई से नैरोबी की उड़ान पर सवार हुए । इसी दौरान एक सहयात्री श्री चन्द्राजी से मुलाकात हुई जो देहरादून से दार-ए-सलाम (तंज़ानिया की राजधानी) जा रहे थे । चन्द्राजी ओ.एन.जी.सी. के परियोजना अधिकारी थे और बहुत ही गंभीर और शांत प्रवृत्ति के थे ।

उस समय भारत में विदेशी मुद्रा भंडार की बहुत कमी होने के कारण केवल आठ डॉलर की मुद्रा ही साथ ले जा सकते थे ।

इस प्रकार बंबई से चलकर दोपहर नैरोबी पहुँच गये, परंतु वहाँ पर भी एक और समस्या हमारी प्रतीक्षा कर रही थी । वहाँ जाकर पता चला कि आगे दार-ए-सलाम को जाने वाली उड़ान निरस्त हो गई अतः रात ग्यारह बजे वाली उड़ान से जाना पड़ेगा । बंबई से आगे की उड़ाने ईस्ट अफ्रीकन एयरवेज़ की थी । नैरोबी में जैसे ही हम लोग उतरे तो बहुत सारे यात्री शहर घूमने को जाने लगे । हमने चन्द्राजी से विमर्श किया, उन्होंने कहा आपके पास केवल आठ डॉलर हैं जिसमें टैक्सी का किराया भी नहीं पूरा होगा अतः एयरपोर्ट पर ही रहना ठीक है ।

भोजन आदि के वाउचर लेकर वहीं पर रुके रहे । पहली बार शाकाहारी भोजन चुनने में परेशानी का सामना करना पड़ा । चन्द्राजी से बात चीत करते हुए सारा दिन बीत गया और रात की उड़ान से हम लोग अपने आखिरी पड़ाव की ओर बढ़ने लगे । परंतु अभी एक और आश्चर्य का सामना करना था ।

मध्यरात्री में दार-ए-सलाम पहुँचे । बाहर निकलने पर चन्द्राजी ने पूछा कोई लेने आएगा, क्योंकि बाहर का दृश्य अनजान लोगों के कारण बहुत भयावह था । यहाँ पर फिर चन्द्राजी ने मदद की । जब किसी को नहीं देखा, तो उन्होंने कहा कि आप मेरे साथ चलिये तथा कहीं ठहरने की व्यवस्था कर देंगे । उनके साथ टैक्सी में सवार हो कर चले । उन्होंने शहर के मध्य में स्थित सेंट्रल होटल में ठहरने की व्यवस्था अपना परिचय पत्र दिखलाकर कर दी । कमरे में पहुँच कर चैन की सांस ली और फौरन सो गये । अगले दिन सुबह आठ बजे आँख खुली तो नीचे भोजन कक्ष से नाश्ता करने के बाद मंत्रालय के बारे में पूछताछ की, जो पास ही निकला । पैदल चल कर वहाँ पहुँचे और संबंधित अधिकारी से मिले । वह बहुत ही मृदुल स्वभाव के थे - उन्होंने उड़ान के बदलने के कारण हुई असुविधा के लिये क्षमा मांगी और बताया कि अगवानी एवं ठहरने की व्यवस्था यात्रा क्रम की मूल प्रति के अनुसार की गई थी । आगे की प्रक्रिया उन्होंने तुरंत करवा दी ।

चार महीने बाद परिवारजन भी पहुँच गये । सम्पूर्ण वातावरण इतना अनुकूल था कि हम सब दो वर्ष की बजाए पूरे पाँच वर्ष की प्रतिनियुक्ती पूरी करके भारत लौटे । इस दौरान बहुत यात्राएं की परंतु पहली यात्रा नहीं दोहराई ।

इस सारे प्रकरण ने अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की प्रसिद्ध कविता 'एक बूंद' की याद ताज़ा कर दी

ज्यों निकल कर बादलों की गोद से थी अभी एक बूंद कुछ आगे बढ़ी

सोचने फिर फिर यही मन में लगी आह क्यों घर छोड़ कर मैं यों बढ़ी ।

दैव मेरे भाग्य में है क्या बदा मैं बचूंगी या मिलूंगी धूल में

या जलूंगी गिर अंगारे पर किसी चू पड़ूंगी या कमल के फूल में ।

श्याम कृष्ण सक्सेना जी सेवानिवृत्त प्राचार्य हैं । आप हिंदी साहित्य पढ़ने और लिखने में विशेष रुचि रखते हैं । वह पर्थ में वर्ष 2008 से रह रहे हैं ।

सखी

सखी, कैसी अजीब दासता है।
बरसो से मेरा साथ दे रही है।
मेरे संग आती जाती है ।
अकेलेपन मे मेरा साथ देती है।

जो दिल की बातें
मैं किसी से न कह पाती
केवल तुझसे ही करती हूँ।
तुझसे ही करती हुँ दिल की बातें।

तू सुनती है सिर्फ़ सुनती है।
कुछ कहती नहीं ख़ामोश रहकर।

मेरी ख़ुशियाँ मेरे हर दुख को
सुनती है तू सखी।
पिछले कई वर्षों से मेरे साथ चलती है तू।
कभी अकेला महसूस नहीं करती ख़ुद को।

सखी, कैसी अजीब दासता है!
तेरे साथ चलते चलते
आदत सी हो गई है तेरी।

अब जब समय आ गया है
तुझसे यूँ बिछड़ने का
तो एक घबराहट सी है।

अकेलेपन में बिताये वो पल
जो सिर्फ़ तेरे साथ बिताये।
वो पल शायद आए ही न मुड़कर!

अब ज़िन्दगी के उस मोड़ पर जा रही हूँ।
जहाँ ख़ुशियाँ और ग़म रखने होंगे दिल में।

तुझसे बिछड़ने का समय आ रहा है।
तू तो होगी फिर भी तुझसे यूँ बातें करने की
फ़ुरसत मिले न मिले।

सखी तुझसे बिछड़ने का
समय आ रहा है।
तुम जैसा सुनने वाला कहाँ मिलेगा।

- **अँचला महेन्द्रू**

मैं दिल्ली में पली बड़ी हूँ और पिछले २६ वर्षों से पर्थ निवासी हूँ। इससे पहले १७ वर्ष अफ़्रीका मे रही। हिंदी मे हमेशा से मेरी रूचि रही है। इतने वर्ष हिन्दुस्तान से बाहर रह कर भी अपने विचार हिन्दी मे व्यक्त करना अच्छा लगता है। कभी कभी कुछ पंक्तियाँ लिख देती हूँ।

अप्सरा - [सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला]

कनक धीरे-धीरे अठारहवें वर्ष के पहले चरण में आ पड़ी। अपार अलौकिक सौंदर्य, एकांत में, कभी-कभी अपनी मनोहर रागिनी सुना जाता। वह कान लगा उसके अमृत-स्वर को सुनती पान किया करती। अज्ञात एक अपूर्व आनन्द का प्रवाह अंगों को अपाद-मस्तक नहला जाता। स्नेह की विद्युल्लता काँप उठती। उस अपरिचित कारण की तलाश में विस्मय से आकाश की ओर ताककर रह जाती। कभी-कभी खिले हुए अंगों के स्नेहभार में एक स्पर्श मिलता, जैसे अशरीर उसकी आत्मा में कोई प्रवेश कर रहा हो। उस गुदगुदी में उसके तमाम अंग काँपकर खिल उठते। अपनी देह के वृंत अपलक खिली हुई ज्योत्स्ना के चंद्र-पुष्प की तरह, सौंदर्योज्ज्वल पारिजात की तरह एक अज्ञात प्रणय की वायु डोल उठती। आँखों में प्रश्न फूट पड़ता, संसार के रहस्यों के प्रति विस्मय।

Paragon Consultants
Chartered Accountants

IMPERIUM
Insurance & Financial Solutions

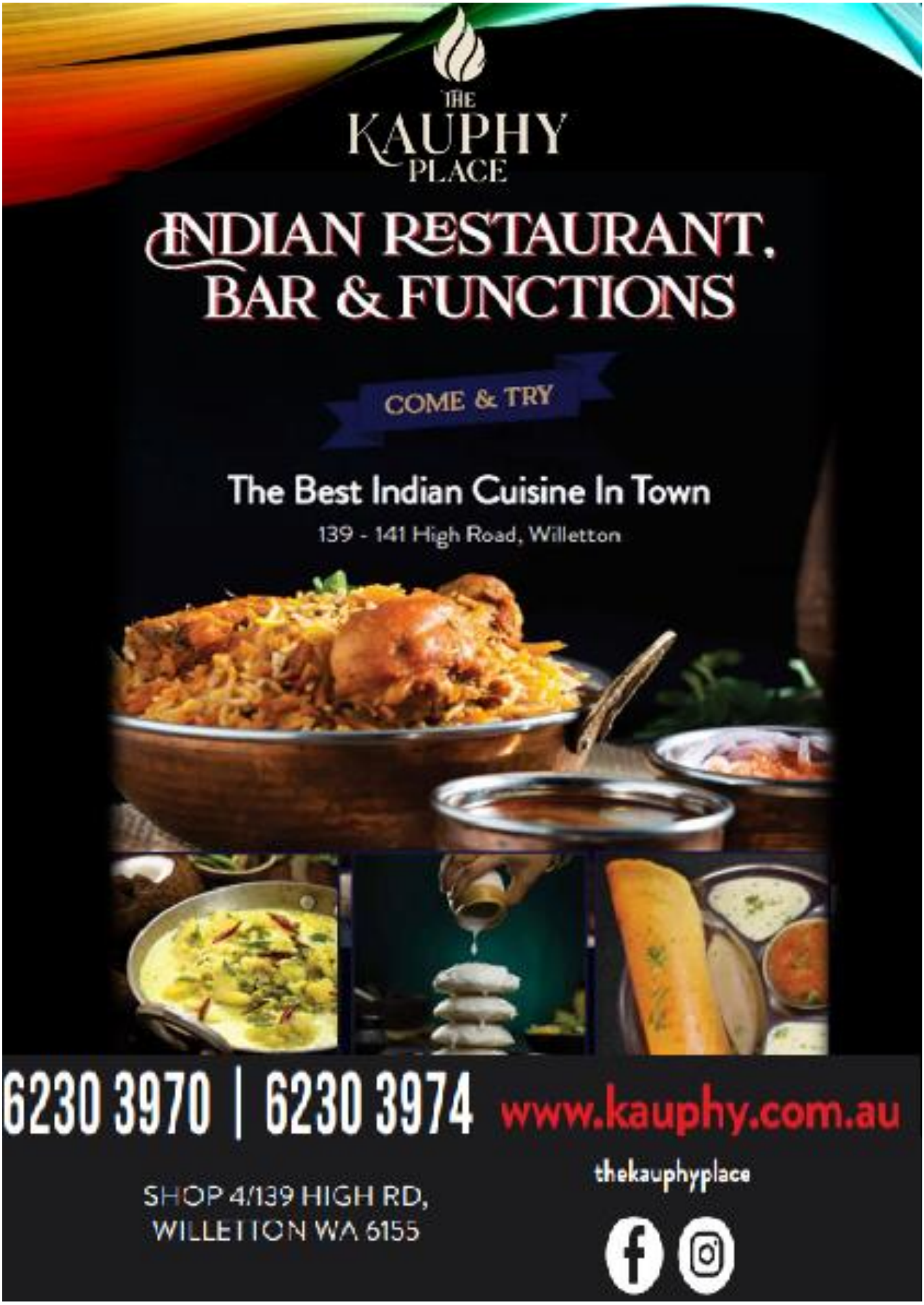
THE
KAUPHY
PLACE
INDIAN RESTAURANT,
BAR & FUNCTIONS
COME & TRY
The Best Indian Cuisine In Town
139 - 141 High Road, Willetton
6230 3970 | 6230 3974
www.kauphy.com.au
thekauphyplace
SHOP 4/139 HIGH RD,
WILLETTON WA 6155

बचपन

बीत गए रे बचपन के दिन
जब हम खेला करते थे
दादी- नानी की बातों में, दुनिया समझा करते थे।
सखियों के संग , खेल के हम
छुट्टियाँ बिताया करते थे।
कज़िन का अर्थ न आने पर
सबको अपना , समझते थे।
आज भी अँखियों में संजोये
सपने आया करते हैं।
जीवन की आपाधापी में
कब जीवन अपना बीत गया
लेकिन इस जीवन से हमने
आगे का मार्ग, है खोज लिया

ज़िंदगी एक सच

एक सच है ज़िंदगी
ज़िंदगी, किताबों की लिखी कोई कहानी नहीं
यह तो पल पल, जिए गए पलों का हिसाब है ज़िंदगी।
पल ख़ुशी के जो भर देते हैं, एक नयी ऊर्जा से
पल दुःख के, जो नया सबक़ सिखाते हैं
हर पल जो हम, महसूस करते हैं
उसका विस्तार है ज़िंदगी
हँसती, मुस्कराती, खिलखिलाती
कभी उदास है ज़िंदगी।
कभी किसी बच्चे की हंसी सी, खिलखिलाती ज़िंदगी
कभी किसी बुजुर्ग के चेहरे की झुर्रियों सी संतुष्ट है ज़िंदगी
पर जैसी भी है, वो मेरी अपनी
बहुत ख़ास है ज़िंदगी
बहुत ख़ास है ज़िंदगी।

-आशा सक्सेना

आशा सक्सेना जी गृहिणी हैं एवं मूल रूप से लखनऊ की रहने वाली हैं। ऑस्ट्रेलिया में वर्ष २००८ से रह रही हैं। आप हिंदी साहित्य पढ़ने और लिखने में विशेष रूचि रखती हैं।

ईश्वर प्रेम ही मानवता एवं देश प्रेम का स्रोत

अभी १५ दिसंबर २०२१ को चित्रकूट में भारत सरकार से पदम् विभूषण प्राप्त परम पावन जगद्गुरु स्वामी श्री रामभद्राचार्य जी के आवाहन पर हिन्दू महाकुम्भ सम्मलेन हुआ। इसमें ५ लाख से भी अधिक सभी सम्प्रदायों/ पंथों/ अखाड़ों/ मठों के संत एवं उनके अनुयायीओं ने भाग लिया। सभी संतों के प्रवचन हृदय को छूने वाले थे। इस सम्मलेन में आर्ट ऑफ़ लिविंग के संस्थापक भारत सरकार से पदम् विभूषण प्राप्त परम पावन संत श्री श्री रवि शंकर जी ने भी भाग लिया। उन्होंने एक बहुत ही छोटा, केवल ३ मिनट का प्रवचन दिया। संतों के श्री मुख से उच्चारित एक एक शब्द का अर्थ अत्यंत गूढ़ और आध्यात्मिक होता है। हम जैसे साधारण व्यक्तियों को उसका अर्थ समझना कभी कभी असंभव हो जाता है। इस सम्मलेन में बोलते हुए उन्होंने एक वाक्य ऐसा कहा जिसका गूढ़ अर्थ समझाने के लिए मेरे पास अनगिनत सन्देश आए। अब मैं भी तो एक साधारण व्यक्ति ही हूँ। परम पावन संत श्री श्री रवि शंकर जी जैसे महान आध्यात्मिक संत की वाणी को समझना मेरे लिए भी तो इतना सरल नहीं। फिर भी मेरी तुच्छ बुद्धि जो उसका अर्थ समझ पाई, वह मैं यहां प्रस्तुत करने का प्रयास करता हूँ।

महान परम पावन संत श्री श्री रवि शंकर जी ने कहा, 'जिस व्यक्ति में ईश्वर प्रेम नहीं, मैं उसके मानवता और देश प्रेम पर एक बड़ा प्रश्न चिन्ह खड़ा करता हूँ।'

अगर मैं इसे दूसरे शब्दों में कहूँ तो संभवतः परम पावन संत कहना चाह रहे थे कि ईश्वर प्रेम से ही मानवता के प्रति प्रेम प्रारम्भ होता है, और जब तक मानवता के प्रति प्रेम जाग्रत नहीं होगा, तब तक किसी भी पुरुष/ नारी को देश से प्रेम और देश के प्रति बलिदान भावना जाग्रत नहीं हो सकती।

मानवता क्या है? संभवतः मानवता को कई प्रकार से परिभाषित किया जा सकता हो, लेकिन मेरी तुच्छ बुद्धि से तो ईश्वर की कृति से प्रेम ही मानवता है। हम सभी नर-नारी, जीव-जंतु, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, पृथ्वी, पर्वत, नदी-सागर इत्यादि सभी ईश्वर की कृति ही तो हैं। इनसे प्रेम ही मानवता है। इनसे प्रेम तब ही होगा जब आप ईश्वर से प्रेम करेंगे एवं इन सभी में ईश्वर की प्रतिमा ही देखेंगे। उदाहरण स्वरुप हमें अपने भाई-बहन, माता-पिता, पुत्र-पुत्री से क्यों अधिक प्रेम होता है, क्योंकि इनमें हम अपना ही रक्त और अपना ही प्रतिबिम्ब देखते हैं। जब आपके इस प्रकार के रक्त सम्बन्धी को कोई प्रतिष्ठा मिलती है, तो आपका हृदय फूला नहीं समाता। इनको अगर कोई दुःख प्राप्त होता है, तो आप भी उतने ही दुःखी हो जाते हैं। किसी अनजान व्यक्ति को अत्यंत मान्यता अथवा प्रतिष्ठा प्राप्त होने पर हृदय को उतनी प्रसन्नता प्राप्त नहीं होती। समाचार की तरह उसे सुनते हैं, और थोड़े ही समय में भूल जाते हैं। उसी प्रकार किसी अनजान व्यक्ति के दुःख को सुन कर शोक तो अवश्य व्यक्त कर देते हैं, परन्तु उतनी वेदना नहीं होती।

दूसरों की प्रसन्नता अथवा वेदना को उतनी ही गहराई से लेने के लिए जितनी आत्मीय जनों के लिए आभासित होती है, हमें उन सब को अपना आत्मीय समझना होगा। यह तभी संभव है जब हम उनको भी उतना ही प्रेम करें जितना अपने आत्मीय जनों को करते हैं। अन्य शब्दों में यह तभी संभव है जब हम ईश्वर को अपना पिता मानें, उसे हृदय से प्रेम करें और उसकी सृष्टि को अपना आत्मीय मानें।

जब आपके हृदय में सभी ईश्वर की सृष्टि के प्रति प्रेम भावना जाग जाएगी, तो जो भी उसको नष्ट करने का प्रयास करेगा, आप उसके विरुद्ध खड़े होंगे, और यही देश प्रेम की दूसरी परिभाषा है।

हम 'ईश्वर से प्रेम' का शास्त्रों के अनुसार अर्थ समझने का प्रयास करते हैं। ईश्वर प्रेम अत्यंत मानवीय एवं दिव्य है। प्रेम को संस्कृत के "परम" शब्द से लिया गया है। परम का अर्थ होता है सकारात्मक भाव की चरम सीमा को पार करना। 'ईश्वर प्रेम' अर्थात ईश्वर के साथ सकारात्मक भाव से सम्पर्क की अनुभूति होना।

जब आप ईश्वर से निःस्वार्थ प्रेम करते हैं, तो वे आपके हृदय में सबके लिए अपना निःस्वार्थ प्रेम भर देते हैं। "मैं, मुझे और मेरा", की चेतना समाप्त हो जाती है। सबको एक ही ईश्वर के आत्म-प्रतिबिम्ब के रूप में आप देखने लगते हैं। किसी भी प्रभु की कृति को आप अपरिचित नहीं समझते। आप जान जाते हैं कि हम सब एक ही ब्रह्म के अंश हैं। तब आप ईश्वर के सच्चे अर्थ को अनुभव करते है। आप अच्छी तरह जान जाते हैं कि ईश्वर सभी प्राणियों में समान और निष्पक्ष रूप से विद्यमान हैं।

एक बार महान संत परम पावन श्री श्री रवि शंकर जी से उनके एक भक्त ने पुछा, 'गुरुदेव, ईश्वर प्रेम का कोई एक ज्वलंत उदाहरण दे कर हमें ईश्वर प्रेम को परिभाषित कीजिए।'

परम पावन संत श्री श्री रविशंकर ने जी कहा, 'ईश्वर से प्रेम का एक ज्वलंत उदाहरण गोपीओं का भगवान् श्री कृष्ण से प्रेम है। श्रीमद्भागवत महापुराण में उद्धव-गोपी संवाद के अनुसार भगवान् श्री कृष्ण मथुरा में बहुत उदास रहते थे। उनके परम मित्र उद्धव उनसे पूछते हैं कि हे प्रभु मथुरा में किस वस्तु की कमी है जो आपको प्रसन्नता नहीं दे पा रही? आप इतना उदास क्यों हैं? तब श्रीकृष्ण उन्हें राधा जी और गोपियों के प्रेम के बारे में बताते हैं। उद्धव जी को उत्सुकता होती है इस प्रेम के बारे में जानने की और वह श्री कृष्ण जैसी ही वेशभूषा बना कर गोपीओं के पास ब्रज पहुंच जाते हैं।'

'उद्धव जी से मिलकर गोपीओं को पता लगता है कि वह श्री कृष्ण के दूत बनकर आये हैं। गोपियाँ समझती हैं कि उन्हें रूठी समझकर श्रीकृष्ण ने मनाने के लिये उन्हें दूत बना कर भेजा है। उद्धव तो आदर से गोपीओं को प्रणाम करते हैं, परन्तु गोपीयां कहती हैं, 'रे मधुप, तू कपटी का सखा है, इसलिये तू भी कपटी है। झूठे प्रणाम करके हमसे

अनुनय-विनय मत कर। हम देख रही हैं कि श्रीकृष्ण की जो वनमाला हमारी सौतों के वक्षःस्थल के स्पर्श से मसली हुई है, उसका पीला-पीला कुमकुम तेरे हृदय पर भी लगा हुआ है।'

'उद्धव जी इसे समझ ही नहीं पाए कि यह कैसा प्रेम है। भगवान श्रीकृष्ण ने बचपन से लेकर किशोर-अवस्था तक जितनी भी लीलाएँ की थीं, उन सबकी याद कर करके गोपियाँ उनका गान करने लगीं। जब गोपियाँ व्याकुल होकर उद्धव से कृष्ण के बारे में जानने को उत्सुक होती हैं तो उद्धव निराकार ब्रह्म और योग की बातें करने लगते है। इससे खीजी गोपियाँ उन्हें काले भँवरे की उपमा देती हैं। सूरदास जी लिखते हैं।'

'उधौ जोग सिखावनि आए।
सृंगी भस्म अथारी मुद्रा, दै ब्रजनाथ पठाए ।।
जो पै जोग लिख्यौ गोपिन कौ, कत रस रास खिलाए ।
तब ही क्यों न ज्ञान उपदेस्यौ, अधर सुधारस लाए ।।
मुरली शब्द सुनत बन गवनिं, सुत पतिगृह बिसराए ।
सूरदास संग छांडि स्या म कौ, हमहिं भये पछताए ।।'

'गोपियाँ कहती हैं, हे सखि, आओ, देखो ये श्याम सुन्दर के सखा उद्धव हमें योग सिखाने आए हैं। स्वयं ब्रजनाथ ने इन्हें श्रृंगी, भस्म, अथारी और मुद्रा देकर भेजा है। हमें तो खेद है कि जब श्याम को इन्हें भेजना ही था, तो हमें अदभुत रास का रसमय आनंद क्यों दिया था? जब वे हमें अपने प्रेम का रस पिला रहे थे तब ये ज्ञान और योग की बातें कहाँ गईं थीं? तब हम श्री कृष्ण की मुरली के स्वरों में सुधबुध खो कर अपने बच्चों और पति को भुला दिया करती थीं। श्याम का साथ छोडना हमारे भाग्य में था ही तो हमने उनसे प्रेम ही क्यों किया, अब हम पछताती हैं।'

'अब थक हार कर गोपियाँ व्यंग्य करना बंद कर उद्धव को अपने तन मन की दशा कहती हैं। उद्धव हतप्रभ हैं, भक्ति के इस अदभुत स्वरूप से। हे उद्धव हमारे मन दस बीस तो हैं नहीं, एक था वह भी श्याम के साथ चला गया। उनके बिना हमारी इन्द्रियाँ शिथिल हैं, शरीर मानो बिना सिर का हो गया है, बस उनके दर्शन की क्षीण सी आशा हमें करोड़ों वर्ष तक जीवित रखेगी। तुम तो कान्हा के सखा हो, योग के पूर्ण ज्ञाता हो। तुम कृष्ण के बिना भी योग के सहारे अपना उद्धार कर लोगे। हमारा तो नंद कुमार कृष्ण के सिवा कोई ईश्वर नहीं है।'

'अंततः गोपियाँ राधा के विरह की दशा बताती हैं, ब्रज के हाल बताती हैं। उद्धव का निर्गुण गोपियों के प्रेममय सगुण पर हावी हो जाता है और उद्धव कहते हैं।'

'अब अति चकितवंत मन मेरौ ।

आयौ हो निरगुण उपदेसन, भयौ सगुन को चैरौ ।।
जो मैं ज्ञान गहयौ गीत को, तुमहिं न परस्यौं नेरौ ।
अति अज्ञान कछु कहत न आवै, दूत भयौ हिर कैरौ ।।
निज जन जानि-मानि जतननि तुम, कीन्हो नेह घनेरौ ।
सूर मधुप उिठ चले मधुपुरी, बोरि जग को बेरौ ॥'

'कृष्ण के प्रति गोपियों के अनन्य प्रेम को देख कर उद्धव भाव विभोर होकर कहते हैं, मेरा मन आश्चयर्चकित है कि मैं आया तो निगुर्ण ब्रह्म का उपदेश लेकर था और प्रेममय सगुण का उपासक बन कर जा रहा हूँ। मैं तुम्हें उपदेश देता रहा, जो तुम्हें छू तक न गया। अपनी अज्ञानता पर लज्जित हूँ कि किसे उपदेश देता रहा जो स्वयं लीलामय हैं। अब समझा कि हरि ने मुझे यहाँ मेरी अज्ञानता का अंत करने भेजा था। तुम लोगों ने मुझे जो स्नेह दिया उसका आभारी हूँ। सूरदास कहते हैं कि उद्धव अपने योग के बेड़े को गोपियों के प्रेम सागर में डुबो कर मथुरा लौट जाते हैं।'

'शास्त्र कहते हैं **"साक्षरों विपरीतत्वे राक्षसों भवति ध्रुवम "** अर्थात ईश्वर प्रेम रहित साक्षर व्यक्ति भी राक्षस हो जाता है। 'प्रेम एवं संस्कार की शून्यता समाज को भ्रष्ट कर देती है। मानव समुदाय को इस भ्रष्टता से छुटकारा दिलाना है तो शिक्षा में नैतिकता एवं ईश्वरीय प्रेम का रंग भरना आवश्यक है।'

ईश्वर से प्रेम निःस्वार्थ होना चाहिए। सांसारिक वस्तुओं के लिए ईश्वर की आराधना सुखद नहीं होती। हमें नहीं पता कि हमारे लिए क्या उपयुक्त है, अतः ईश्वर से निःस्वार्थ प्रेम करते हुए यह उसी पर छोड़ दो कि वह तुम्हें वही दें जो तुम्हारे हित में हो।'

परम पावन पूज्यनीय स्वामी श्री रामानंदाचार्य जी के शिष्य संत कबीर जी भगवान् श्री राम को अपना इष्ट मानते थे। उन्होंने अपने काव्य में प्रेम शब्द का प्रयोग ईश्वर प्रेम से ही किया है।

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय ।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय ।।
सबै रसायन हम किया, प्रेम समान ना कोये ।
रंचक तन मे संचरै, सब तन कंचन होये ।।

बचपन में मेरे दादा जी द्वारा सुनाई एक कथा जिसमें ईश्वर प्रेम से मानव प्रेम की प्रेरणा मिलती है, मेरे मानस पटल पर अभी भी छाई हुई है। मैंने बचपन में ही उस कथा का काव्य रूपांतरण किया था, जिसको मैं यहाँ प्रस्तुत करता हूँ। इससे प्राप्त शिक्षाओं से हमको सीख लेते हुए जीवन में ईश्वर प्रेम की ओर अपना ध्यान देना चाहिए।

हम एक कथा सुनाएं । ईश प्रेम का भाव जगाएं ।।

थी एक निर्धन विधवा । साथ सुता रहती अबला ।।

एक रात प्रभु स्वप्न देवें । हम कल घर तेरे आवें ।।

प्रातः सुता से कहहीं । सत्कार प्रभु प्रबंध करहीं ।।

माँ बेटी घर खंखाला । दो सौ रुपए देखे आला ।।

बेटी हाट चल दीन्हीं । छाता कम्बल ले लीन्हीं ।।

ऋतू ठण्ड अति होई । भोजन खरीद वह लेई ।।

तबहिं बिजली चमकी । वर्षा तेज आ धमकी ।।

चली बैठ तांगा घोड़ा । राह में ठिठुरता जोड़ा ।।

रोको तांगा वह बोली । कूद पहुँची वह भोली ।।

युगल शिशु साथ देखा । ज्वर तपित तन देखा ।।

डाला कंबल तन काया । छाते ने वर्षा से बचाया ।।

भूखा देख दी खाना । हठ की जाओ दवाखाना ।।

बचे रुपए सब दीन्हे । बैठ तांग घर चल दीन्हें ।।

माँ को कथा सुनाई । महतारी तब हिय लगाई ।।

ना संभव अब सत्कार । प्रभु आएँगे जब द्वार ।।

हरि दया की मूर्ती । क्षमा हमरी सब गलती ।।

दर्श दिए प्रभु सपना । हर्षित आशीषहिं दीना ।।

सत्कार श्रेष्ठ है कीन्हा । निर्धन को सब दीन्हा ।।

ईशप्रेम का उदाहरण । हो मानव यही आचरण ।।

ओम शांतिः शान्तिः शांतिः ।

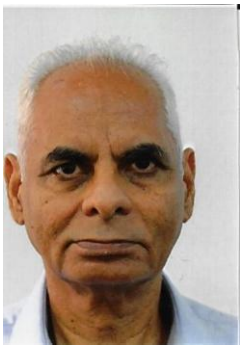

डॉ यतेंद्र शर्मा, अध्यक्ष, श्री राम कथा संस्थान पर्थ

डॉ यतेंद्र शर्मा का परिवार भारत के प्राचीनतम श्री रामानंदी सम्प्रदाय (स्थापना १४वीं शताब्दी) से जुड़ा रहा है। सन २०१६ में उन्होंने श्री सम्प्रदाय के सिद्धांत पर आधारित 'श्री राम कथा संस्थान पर्थ' की स्थापना की। डॉ शर्मा की रूचि भक्ति, रस काव्य एवं लेखन में रही है। उन्होंने सनातन धर्म के महान ऋषिओं, माताओं और सपूतों पर अनगिनत काव्यों की रचना और पुस्तके लिखीं हैं। उनके भक्ति रस साहित्य के कुछ अंश श्री राम कथा संस्थान पर्थ की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।

Plan your teaching with resources from Open Language Portal
Upcoming ZOOM session - 13Th July 2022, 11:30 to 13:00 (Perth time)
Register at http://forms.office.com/r/rrb28nYqdG

सीता की रक्षा कैसे हो

यह दसशीश नही है, ना यह स्वर्ण महल में सीमित है
जब रावण मन के अंदर है, सीता की रक्षा कैसे हो।

वो राम नही, वो बाण नहीं, जो इस रावण को भेद सकें,
है नही जटायू की दृष्टि, जो इसकी लंका देख सके,
यह लक्ष्मण रेखा लांघ चुका, सीता की रक्षा कैसे हो।

सीता जब मात उदर में है, तब रावण उसका काल बना,
यदि जन्म हुआ, तो सीता पर सारे पहरों का जाल बना,
अपने ही घर में बंदी है, सीता की रक्षा कैसे हो।

सीता की गलियों में रावण की कुत्सित दृष्टि लगी रहती,
प्रत्यक्ष कभी या छद्म वेश सीता अपमान रही सहती,
रावण स्वच्छन्द विचरता है, सीता की रक्षा कैसे हो।

यह रावण बीच बसे अपने, हर क्षण सीता भयभीत रहे,
जिनको पुरुषोत्तम होना था, वो ही मर्यादा भूल गये,
प्रहरी ही जब आघात करे, सीता की रक्षा कैसे हो।

रावण यह अहंकार का है, जिसको सीता अबला दिखती,
है गर्व श्रेष्ठता का इतना, सीता इसको अधीन लगती,
यह रावण घट घट व्यापित है, सीता की रक्षा कैसे हो।

वनवास मात्र सीता को है, प्रतिकार स्वयं करना होगा
इस रण में कोई राम नही, यह सीता को लड़ना होगा,
रावण निर्लज्ज विचरता है, फिर सीता क्यों मर्यादित हो
सीता के हाथों रावण की लक्ष्मण रेखा निर्धारित हो।

ललकार जनक को है, अब सीता को ऐसे पाला जाए
रावण की दृष्टि पड़े जब भी, सीता मां दुर्गा बन जाए,
इस रावण की अमृत नाभि पर सीता तुम ही वार करो

- **अभिषेक मिश्रा**

पाठशाला परिचय

श्री रूपेश कुलश्रेष्ठ
(प्रधानाचार्य)

श्रीमती पूजा भारद्वाज
(सांस्कृतिक समन्वयक)

श्रीमती श्रद्धा वार्ष्णेय
कार्यकारी स्थान प्रमुख - सुबियाको /उप-प्रधानाचार्य/शिक्षक)

श्रीमती कृति सक्सेना
(पाठशाला व्यवस्थापक)

श्रीमती शिप्रा तिवारी
(स्थान प्रमुख- कैनिंग वेल / शिक्षक))

श्री अंकुर वर्मा
((शिक्षक))

श्रीमती शिल्पा कामदार
(शिक्षक)

श्रीमती प्रिया तुलसानी
(शिक्षक)

श्रीमती रीता कर्ण
(अभिभावक शिक्षक)

श्रीमती स्मृति महाजन
(स्थान प्रमुख - जुंडालूप/ शिक्षक)

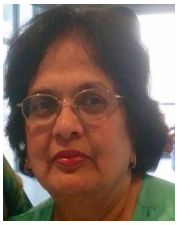

श्रीमती सुदेश अग्रवाल
(शिक्षक)

श्रीमती दर्शना शर्मा
(शिक्षक)

सरिता चौधरी
(शिक्षक)

श्रीमती गार्गी दास
(अभिभावक शिक्षक)

पाठशाला की उपलब्धियां 2021-2022

❖ पाठशाला के इस सत्र की शुरुआत फरवरी के तीसरे सप्ताह से पर्थ में हमारी ४ शाखाओं में हुई Iसत्र के पहले दिन हमारी सभी शाखाओं में केक काटा गया l सभी ने हिंदी भाषा जो कि WA के मुख्य विद्यालयों में 2023 से आ रही है उसका स्वागत किया l

❖ इस साल हमने अपने वर्ष का आरंभ पाठशाला की नई पुस्तकों के साथ किया l इस बार फाउंडेशन से कक्षा 2 तक नई पुस्तकें वितरित की गई l

❖ हमारे छात्रों ने AUSIT अनुवाद गतिविधि में भाग लिया।हमारे पास कुल 16 प्रविष्टियां थीं। इसमें हमारा एक छात्र विजेता रहा और दो छात्रों ने योग्यता पुरस्कार प्राप्त किये।

❖ हमारे अध्यापकों ने अपने ज्ञानार्जन के लिए ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया I

❖ पाठशाला के बच्चों ने 93.5EBA रेडियो पर गाँधी जयंती पर कार्यक्रम प्रस्तुत किया और अपनी प्रतिभा दिखाईI

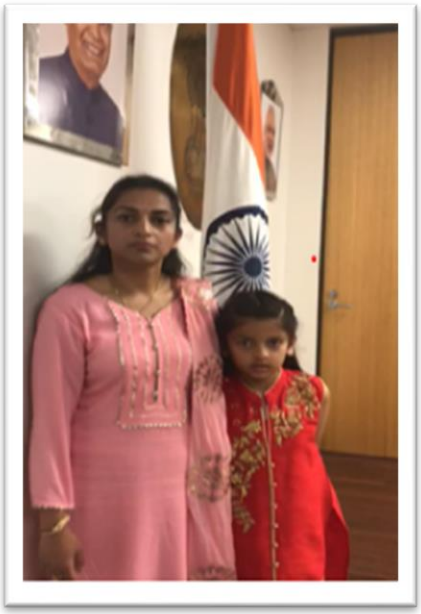

❖ भारत के महावाणिज्य दूतावास, पर्थ में आयोजित गांधी जयंती के कार्यक्रमों में भी हमारे छात्रों ने उत्साह के साथ भाग लिया 1

❖ हमारे छात्रों ने हिंदी दिवस के अवसर पर भारत के महावाणिज्य दूतावास, पर्थ में प्रदर्शन किया। निबंध प्रतियोगिता में हमारे एक छात्र ने दूसरा पुरस्कार जीता।

❖ हमारे स्कूल ने इंद्रधनुष में भाग लिया। पाठशाला के छात्रों ने यह प्रदर्शित करने के लिए एक छोटा सा अभिनय किया कि किस प्रकार से हिंदी को अन्य सभी भाषाओं के बीच एक राष्ट्रीय भाषा बनाया गया।

❖ भारत के स्वतंत्रता दिवस के 75 वें वर्ष के अवसर पर पाठशाला के छात्रों ने ISWA द्वारा आयोजित संगम के वार्षिक कार्यक्रम में प्रस्तुति दी। हमारे छात्रों ने कार्यक्रम की शुरुआत में भारतीय राष्ट्रगान और ऑस्ट्रेलियाई गान गाया। हमारे छात्रों के लिए इतने बड़े मंच पर प्रदर्शन करने का यह एक शानदार अवसर था।

❖ इस बार दिवाली मेले पर भी विद्यालय द्वारा सूचना मंच लगाया गया 1 जिससे लोगों को अधिक से अधिक जानकारी दी गई 1

❖ २७ नवंबर २०२१ को हिंदी पाठशाला के वार्षिकोत्सव(फुलवारी) का आयोजन किया गयाI सभी पाठशाला के छात्रों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किएI

❖ गत वर्ष में हमारे छात्रों को ऑस्ट्रेलिया डे और भारतीय गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रगान गाने का अवसर प्राप्त हुआ I

❖ सुभाष चंद्र बोस जयंती पर ISWA द्वारा आयोजित कार्यक्रम में हमारे छात्रों ने कविता बोलकर सभी को मंत्रमुग्ध किया I

❖ इस वर्ष पाठशाला के छात्रों ने 'आजादी का अमृत महोत्सव' नाम के पोस्टर और स्लोगन लेखन प्रतियोगिता में भाग लिया। छात्रों की रचनात्मकता उनके महान कार्यों में परिलक्षित हुई।

पाठशाला की शान ,

हिंदी भाषा का उत्थान I

संकलन: श्रीमती श्रद्धा वार्ष्णेय

रात का आकाश

रात का आकाश
कल खिड़की पर आकर रुक गया।

देख कर मुझको थका मांदा सा वह कहने लगा
दिखता हो क्यों अस्वस्थ इतने,
हो गये कितने बरस आए नहीं मिलने
कहां थे व्यस्त इतने।

कौन है यह, जानता हूं क्या इसे मैं
याद कुछ आता नही था,
अजनबी यह झांकता है क्यों मेरी खिड़की में
मैं कुछ भी समझ पाता नहीं था।

देख कर मुझको चकित
कहने लगा शायद नहीं तुम जान पाए,
मैं सखा बचपन का तेरे
लग रहा है तुम नही पहचान पाए।

सांझ होते ही निकल जाते थे संग
टूटे सितारे ढूंढ़ने को,
जुगनुओं को मैं बुला लाता था
अपने संग मिचौली खेलने को।

चांद पर रहती है जो बुढ़िया
भला पाहुची वो कैसे?, सोचते थे,
लेके आता हूं कहां से इतने तारे,
रोज मुझसे पूछते थे।

रात में जब उस खुली छत पर
सभी बच्चों के संग होती थी नानी,

मैं भी सुनता था वहीं बैठा
तुम्हारे साथ परियों की कहानी।

पर समय के साथ बदले तुम
भूला दी सारी बातें,
मैंने तो अब भी बचा रखी है
तेरे साथ वाली सारी यादें।

दिन ढले आता हूं अब भी
टिमटिमाते जुगनुओं को साथ लेकर,
लौट जाते हैं सितारे
बंद खिड़की से तेरा आभास लेकर।

हो सके तो खोल कर अपने किवाड़े
फिर कभी मिलने को आओ,
चांद की बुढ़िया अभी भी याद करती है तुम्हे
कुछ हाल उसका पूछ जाओ।

धूल अब उतरी मेरे स्मृति पटल से
नीर सा अखों में मेरी छा गया था,
हाथ पकड़े रात के आकाश का
मैं उस से मिलने घर के बाहर आ गया था।

- **अभिषेक मिश्रा**

अभिषेक मूलतः लखनऊ उत्तर प्रदेश से हैं और नौ वर्षों से पर्थ में रहते हैं। वो विगत कई वर्षों से हिंदी साहित्य से जुड़े हुए है। उनका एक काव्य संग्रह ' ज़िंदगी काफी है ' प्रकाशित हो चुका है।

जल-मिट्टी पर तीन कुण्डलियाँ

मरूधरा *(राजस्थानी बोली में)*
म्हारी माटी मरुधरा, रजवाडां री शान।
मीठी बोले मोरणी, अलगोजां रो ग़ान।।
अलगोजां रो ग़ान, गौरड़ी घूमर घाले।
टिब्बां ढलती ढाण, टोरड़ी* सिंगरी चाले।।
कहे 'कूकणा' राय, साँझ धोरां री न्यारी।
बणो पावणा आज, पधारो धरती म्हारी।।

**टोरड़ी = ऊँटनी, ढाण = मध्यम गति की दौड़;*

जल-संरक्षण
पानी बिन जीवन नहीं, कहते संत-सुजान।
है अति-दोहन हो रहा, लें इसका संज्ञान।।
लें इसका संज्ञान, बने ये विपदा भारी।
पा ले तू यदि नीर, पले ये कुदरत सारी।।
कहे 'कूकणा' राय, तुरत कर जुगत सयानी।
बहे सदा जल-धार, कभी ना सिमटे पानी।।

भूजल
भूजल हम सब के लिये, अनुपम जल-भंडार।
रिस बारिश जिसमें सदा, करती जल संचार।।
करती जल संचार, झील भू-गर्भित भरती।
लें इसका संज्ञान, ढीलें न जाएँ बरती।।
कहे 'कूकणा' राय, निधि ये नयन से ओझल।
बिना ताल खुदवाय, बचेगा कैसे भूजल।।

रेत की मुट्ठी सा ये जीवन

जाने कब फिसले हाथों से
रेत की मुट्ठी सा ये जीवन

वक्र पगों की चाल चलता
रेत के सागर में बहता
आँधियों के उग्र असर में
दिशाहीन पथिक सा हर दिन
रेत की मुट्ठी सा ये जीवन

भूतलों ने घर छुड़ाया
कुछ देर आसमान छुआया
पटक धरा वक्ष पर फिर से
याद दिलाया माँ का आँगन
रेत की मुट्ठी सा ये जीवन

सावन बरसा जी लगाकर
धनक-धमक से गगन सजाकर
पोखर नाले भरे नीर से
नृत्य-नाद संग पुलकित यौवन
रेत की मुट्ठी सा ये जीवन

घूँट अभी एक ही भरी थी
जलधारा सिमटी बिखरी थी
नदी यहाँ से होकर गुज़री
रहा प्यास से व्याकुल ये मन
रेत की मुट्ठी सा ये जीवन

शुष्क पात सम पल ये पिसरे
बरस बरस सावन भी बिसरे
पुरवा चुप है, बरखा रूठी
ढीली पकड़ ढूँढे अवलम्बन
रेत की मुट्ठी सा ये जीवन

मिट्टी मैं हूँ, मिटना मुझको
क्यूँ न बहूँ निर्बाध, रेणु बन
रेत की मुट्ठी सा ये जीवन

जाने कब फिसले हाथों से
रेत की मुट्ठी सा ये जीवन

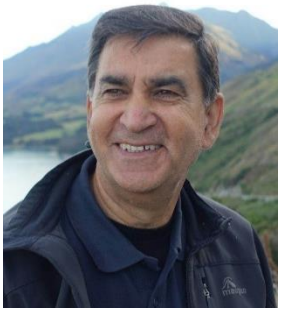

हरियाणा, भारत में **जन्म**। सम्प्रति एडिलेड ऑस्ट्रेलिया में वरिष्ठ वैज्ञानिक (चीफ साइंटिस्ट) तथा यूनिवर्सिटी ऑफ़ एडिलेड में प्रोफ़ेसर के पद पर कार्यरत।

हिंदी साहित्य में विशेष रुचि । ऑस्ट्रेलिया से काव्य संकलन, बूमरैंग १ तथा बूमरेंग २, में कई रचनाएँ प्रकाशित। अनुभूति व् अन्य इ-पत्रिकाओं में भी रचनाएँ छपीं। विश्वरंग अंतर्राष्ट्रीय कला महोत्सव में विशेष योगदान।

डॉ राय कूकणा, एडिलेड - ऑस्ट्रेलिया

झांसी की रानी / सुभद्राकुमारी चौहान

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।

चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

सत्य और अहिंसा

गांधीजी के विषय में सोचते ही यह तो शब्द हमारे दिमाग में आ जाते हैं, सत्य और अहिंसा । एक तरह से कहे तो यह उनके नाम का पर्यायवाची बन चुके हैं ।

वैसे तो हमारे वेद और उपनिषद सत्य अहिंसा के नैतिक पाठ से भरे हुए हैं लेकिन वर्तमान समय में अहिंसा को अपने जीवन में ज्वलंत उदाहरण के रूप में गांधी जी ने ही प्रस्तुत किया । सारा विश्व उनके इस शांतिपूर्ण संदेश को का बहुत ही सम्मान करता है। यह एक मनुष्य द्वारा पूरे देश को आंदोलन से जोड़ने का भी एक सफल उदाहरण है।

लेकिन अगर हम सत्य और अहिंसा की जिम्मेदारी सिर्फ गांधी जी पर ही छोड़ देंगे तो यह ठीक नहीं है । वैसे तो सत्य सार्वभौमिक होता है, समय और देश काल की सीमाओं से परे पर अधिकतर हम अपने निजी सत्य को ही सत्य मानते हैं । क्योंकि हमारे परिवेश में हमने उसी यथार्थ को भोगा है । लेकिन जैसे जैसे हमारा निजी सत्य, सार्वभौमिक सत्य के पास पहुंचता जाता है हम कह सकते हैं कि हम जीवन में उन्नति प्राप्त कर रहे हैं ।

सच बोलने का एक फायदा यह भी है कि आपको यह याद नहीं रखना पड़ता कि आपने कब किससे ,किस विषय पर, क्या कहा था । आपके सारे अनुभवों का केवल एक ही संस्करण होता है और वह सभी संभावनाओं में समान होता है । लेकिन जैसा शास्त्रों में कहा गया है, कि कड़वा सच कभी कभी लोगों को काफी कष्ट पहुंचा सकता है, तो ऐसे में इस बात का विशेष ध्यान रखें की सत्य तो कहें लेकिन उसके साथ थोड़ा सा मीठा पन भी बनाए रखें ।

अहिंसा का अर्थ शारीरिक नहीं है । वस्तुतः हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम अपने शब्दों और विचारों से भी किसी को दुख ना पहुंचाएं । शारीरिक कष्ट के मुकाबले भावनात्मक और मानसिक कष्ट अधिक दुखदायी । अहिन्सक प्रवर्ती न सिर्फ दूसरों की तरफ पर अपनी तरफ भी हो सकती है । औरों का भला करने के लिए हम अपने साथ अन्याय कर बैठते हैं, यह भी ठीक नहीं है ।

सत्य अहिंसा को अपने आचरण में बहुत ही नैसर्गिक रूप से स्थान दें और खुशहाल परिवार, समाज, देश एवं विश्व की रचना में अपना सहयोग दें ।

- **कुशल कुशलेंद्र**
  पर्थ, ऑस्ट्रेलिया

नया सबेरा

अम्मा जैसे ही घुटनों पे हाथ रख साड़ी ठीक करते हुए उठीं तो देखा दरवाज़े से काम करने वाली महरी कमला हड़बड़ कर घर में घुस रही है। अम्मा उसे देखते ही तपाक से बोली, "अब है ये तेरे काम पर आने का समय? सुबह से इन्तज़ार कर रही हूँ तेरा। कितना काम पड़ा है और आज शाम को लोग भी खाने पर आने वाले हैं"। अम्मा गुस्से से तमतमा रही थीं। कमला वैसे ही परेशान दिख रही थी अब वह भी भिनभिनाने लगी, "अरे माताजी अब आप काहे चिल्ला रही हैं हम पर? हम तो वैसे ही इत्ते परेसान हैं! मेरा आदमी आज फिर पीकर आ गया और हमसे मारपीट करने लगा। जो पैसे थे वो भी खतम कर आया। बच्चे भी सहमे हुए हैं उनकी फीस के पैसे भी सारे के सारे पी गया। हमारा सरीर भी दर्द के मारे झन्ना रहा है। का करें हम तो भर पाए ऐसी जिनगी से। आपही बताओ हम का करें। कब से कह रहे हैं कि हमें निकालो इस कीचड़ से।"

उधर से नीला ने जब ये पुराण फिर से सुना तो अम्माजी के पास आकर बोली, "चाचीजी इस बेचारी का रोज़ रोज़ का दुखड़ा सुनकर मन ख़राब हो जाता है। क्यों नहीं हम इसकी सहायता कर सकते? कब से कह रही है कि बच्चों के भले के लिए वह आदमी को छोड़ना चाहती है। मार खा खा कर बेचारी नीली पड़ गयी है। घर के पीछे जो कोठरी ख़ाली पड़ी है, वहीं आकर बच्चों के साथ रह लेगी और हमारे और कुछ और घरों का काम पकड़ कर गुज़र बसर कर लेगी।"

अम्माजी का तो बस फिर गुस्सा आसमान पर। "अरे मैंने क्या धर्मशाला खोली है कि जिसको देखो उसे शरण देती जाऊँ। बड़ी आयी समाज सेवक बनने वाली।" नीला फिर भी प्यार से संयत हो कर बोली, "अरे चाचीजी किसी दुखियारी की दुआएँ मिलेंगी, फिर से सोच लो। हम औरत होकर भी औरत का साथ नहीं देंगी तो कौन देगा। ज़रा सोचिए घर के पीछे रहेगी तो आपको भी काम का आराम रहेगा।"

अभी तक कमला भी आशा भरी नज़रों से अम्माजी को तक रही थी। उसके चेहरे से दर्द, आशा, भय, करुणा, दुःख सब एक साथ ही झलक रहे थे। इस बीच अम्मा भी संयत हो चली थीं और सोचने लगीं थीं कि हाँ कमला के आने से काम में आराम तो ज़रूर होगा। अब जोड़ों का दर्द भी तो परेशान करने लगा है।

फिर कुछ देर सोचकर बोलीं, "अच्छा कमला पहले जा काम शुरू कर और हाँ कल से आ जाना पीछे वाली खोली में अपने बच्चों के साथ।" फिर लम्बी साँस लेकर कर सोचने लगीं, चलो एक बेचारी को तो घरेलू हिंसा के दलदल से निकालूँ पर इतनी कैसी कमलाओं का क्या होगा जो इस दलदल में फँसी पड़ी हैं?

अब अम्मा ने नीला की ओर मुस्करा के देखा और सोचा कि चलो पहले कम से कम एक से ही शुरूवात की जाये। नीला ख़ुशी से 'मेरी प्यारी चाची' कहकर अम्मा के गले लटक गयी और कमला मुँह फाड़े अम्मा की ओर देखते देखते काम पर लग गयी।

राज्यश्री मालवीय, पर्थ ऑस्ट्रेलिया

मेरे घर आना

सस्नेह खुलेंगे मेरे घर के द्वार

मेरे घर ज़रूर आना

अपना समझ कर दरवाज़ा खटखटाना

सप्रेम भीतर चले आना मेरे घर,

मेरे आँगन में नन्हे नन्हे पैरों के

निशान हर तरफ़ हैं फैले

नन्ही नन्ही हथेलियों के फूल हर तरफ़ हैं

खिले हर ओर रंग बिरंगे खिलोनें हैं

बिखरे गूंजती हैं यहाँ हंसी, होता है झगड़ा,

कभी होते हैं नख़रे यहाँ रहता है मेरा परिवार,

हैं यहाँ कई पीढ़ियों के बसेरे

घर के माहौल में इत्र नहीं,

खाने की खशबू है रची

रसोई ताजे बने खाने के बरतनों से है सजी

ग़र ऐसे घर की हो दरकार

तो मेरे घर चले आना

जब भी जी भर कर करनी हो बातें दो चार

तो मेरे घर चले आना

जब याद आए तुम्हें तुम्हारा परिवार

याद आए अपनों का प्यार, तकरार, मनुहार

तो मेरे घर चले आना

यहाँ बसा है छोटे बड़ों का प्यार

थोड़ी सी तकरार थोड़ा सा मनुहार

जब चाहिए ऐसे स्नेह के उपहार

तो मेरे घर चले आना

ग़र खुद से निकल कर औरों को दे सको प्यार

तो सदा खुले हैं हमारे घर के द्वार

हमारे घर ज़रूर आना

पर ग़र तुम्हें चाहिए चमकते दरो दीवार,

दौलत के अम्बार हो शानो शौक़त की दरकार

हो अपनी हैसियत से प्यार

ग़र छोटा लगे मेरे घर का द्वार

तो मेरे घर मत आना

तब तुम अपना क़ीमती समय बचाना

बाहर से ही लौट जाना

तुम मेरे घर मत आना, मत आना

रेणु शर्मा

डॉक्टर रेणु शर्मा २० वर्षों से अपने परिवार के साथ पर्थ वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया में रहती हैं। रेणु हिंदी साहित्य में रुचि रखती हैं और हिंदी कवितायें और कहानियाँ लिखती हैं। उनकी कवितायें प्रवासी भारतीयों की भावनाओं को दर्शाती हैं और सामयिक विषयों को अभिव्यक्त करती हैं। उनकी कवितायें हिंदी समाज की भारत भारती पत्रिका में प्रकाशित होती रहती हैं और ऑस्ट्रेलिया से प्रकाशित पुस्तक बूमरैंग में भी प्रकाशित हुई हैं ।

अतीत के पन्नो से

१९९७ – पच्चीस वर्ष पूर्व

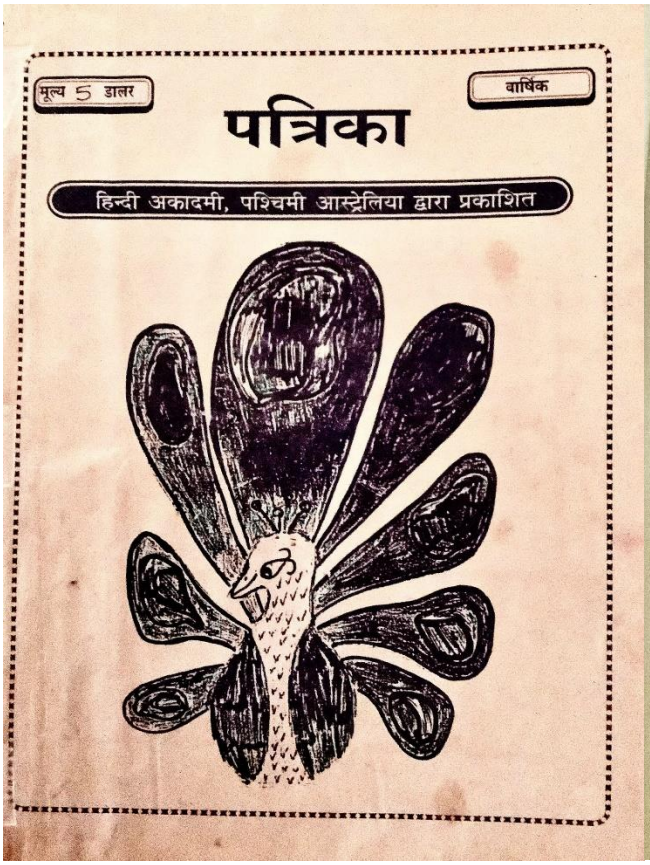

मूल्य 5 डालर

वार्षिक

पत्रिका

हिन्दी अकादमी, पश्चिमी आस्ट्रेलिया द्वारा प्रकाशित

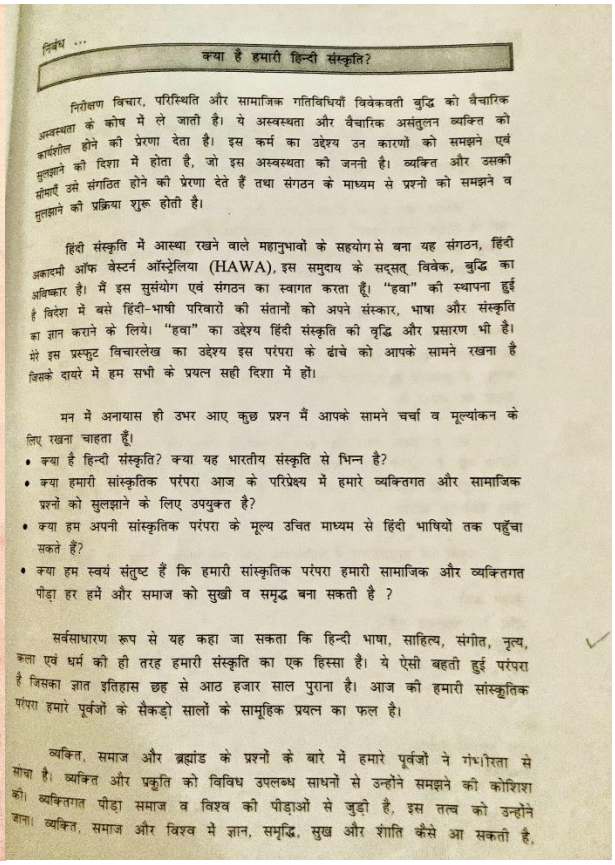

निबंध ...

क्या है हमारी हिन्दी संस्कृति?

निरीक्षण विचार, परिस्थिति और सामाजिक गतिविधियाँ विवेकवती बुद्धि को वैचारिक अस्वस्थता के कोष में ले जाती है। ये अस्वस्थता और वैचारिक असंतुलन व्यक्ति को कार्यशील होने की प्रेरणा देता है। इस कर्म का उद्देश्य उन कारणों को समझने एवं सुलझाने की दिशा में होता है, जो इस अस्वस्थता को जननी है। व्यक्ति और उसकी सीमाएँ उसे संगठित होने की प्रेरणा देते हैं तथा संगठन के माध्यम से प्रश्नों को समझने व सुलझाने की प्रक्रिया शुरू होती है।

हिंदी संस्कृति में आस्था रखने वाले महानुभावों के सहयोग से बना यह संगठन, हिंदी अकादमी ऑफ वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया (HAWA), इस समुदाय के सदस्त् विवेक, बुद्धि का अविष्कार है। मैं इस सुसंयोग एवं संगठन का स्वागत करता हूँ। "हवा" की स्थापना हुई है विदेश में बसे हिंदी-भाषी परिवारों की संतानों को अपने संस्कार, भाषा और संस्कृति का ज्ञान कराने के लिये। "हवा" का उद्देश्य हिंदी संस्कृति की वृद्धि और प्रसारण भी है। मेरे इस प्रस्फुट विचारलेख का उद्देश्य इस परंपरा के ढांचे को आपके सामने रखना है जिसके दायरे में हम सभी के प्रयत्न सही दिशा में हो।

मन में अनायास ही उभर आए कुछ प्रश्न मैं आपके सामने चर्चा व मूल्यांकन के लिए रखना चाहता हूँ।

- क्या है हिन्दी संस्कृति? क्या यह भारतीय संस्कृति से भिन्न है?
- क्या हमारी सांस्कृतिक परंपरा आज के परिप्रेक्ष्य में हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक प्रश्नों को सुलझाने के लिए उपयुक्त है?
- क्या हम अपनी सांस्कृतिक परंपरा के मूल्य उचित माध्यम से हिंदी भाषियों तक पहुँचा सकते हैं?
- क्या हम स्वयं संतुष्ट हैं कि हमारी सांस्कृतिक परंपरा हमारी सामाजिक और व्यक्तिगत पीड़ा हर हमें और समाज को सुखी व समृद्ध बना सकती है ?

सर्वसाधारण रूप से यह कहा जा सकता कि हिन्दी भाषा, साहित्य, संगीत, नृत्य, कला एवं धर्म की ही तरह हमारी संस्कृति का एक हिस्सा है। ये ऐसी बहती हुई परंपरा है जिसका ज्ञात इतिहास छह से आठ हजार साल पुराना है। आज की हमारी सांस्कृतिक परंपरा हमारे पूर्वजों के सैकड़ो सालों के सामूहिक प्रयत्न का फल है।

व्यक्ति, समाज और ब्रह्मांड के प्रश्नों के बारे में हमारे पूर्वजों ने गंभीरता से सोचा है। व्यक्ति और प्रकृति को विविध उपलब्ध साधनों से उन्होंने समझने की कोशिश की। व्यक्तिगत पीड़ा समाज व विश्व की पीड़ाओं से जुड़ी है, इस तत्व को उन्होंने जाना। व्यक्ति, समाज और विश्व में ज्ञान, समृद्धि, सुख और शांति कैसे आ सकती है,

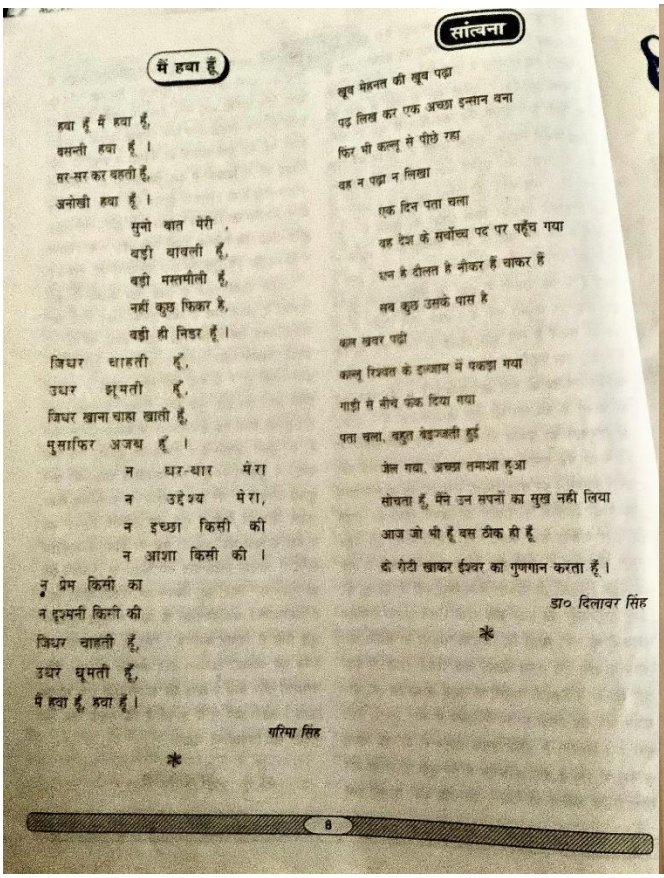

सांत्वना

मैं हवा हूँ

हवा हूँ मैं हवा हूँ,
बसन्ती हवा हूँ ।
सर-सर कर बहती हूँ,
अनोखी हवा हूँ ।
सुनो बात मेरी ,
बड़ी बावली हूँ,
बड़ी मस्तमौली हूँ,
नहीं कुछ फिकर है,
बड़ी ही निडर हूँ ।
जिधर चाहती हूँ,
उधर घूमती हूँ,
जिधर खाना चाहा खाती हूँ,
मुसाफिर अजब हूँ ।
न घर-बार मेरा
न उद्देश्य मेरा,
न इच्छा किसी की
न आशा किसी की ।
न प्रेम किसी का
न दुश्मनी किसी की
जिधर चाहती हूँ,
उधर घूमती हूँ,
मैं हवा हूँ, हवा हूँ ।

गरिमा सिंह

*

खूब मेहनत की खूब पढ़ा
पढ़ लिख कर एक अच्छा इन्सान बना
फिर भी कल्लू से पीछे रहा
वह न पढ़ा न लिखा
एक दिन पता चला
वह देश के सर्वोच्च पद पर पहुँच गया
धन है दौलत है नौकर हैं चाकर हैं
सब कुछ उसके पास है
कल खबर पढ़ी
कल्लू रिश्वत के इल्जाम में पकड़ा गया
गाड़ी से नीचे फेंक दिया गया
पता चला, बहुत बेइज्जती हुई
जेल गया, अच्छा तमाशा हुआ
सोचता हूँ, मैंने उन सपनों का सुख नहीं लिया
आज जो भी हूँ बस ठीक सी हूँ
दो रोटी खाकर ईश्वर का गुणगान करता हूँ ।

डा० दिलावर सिंह

*

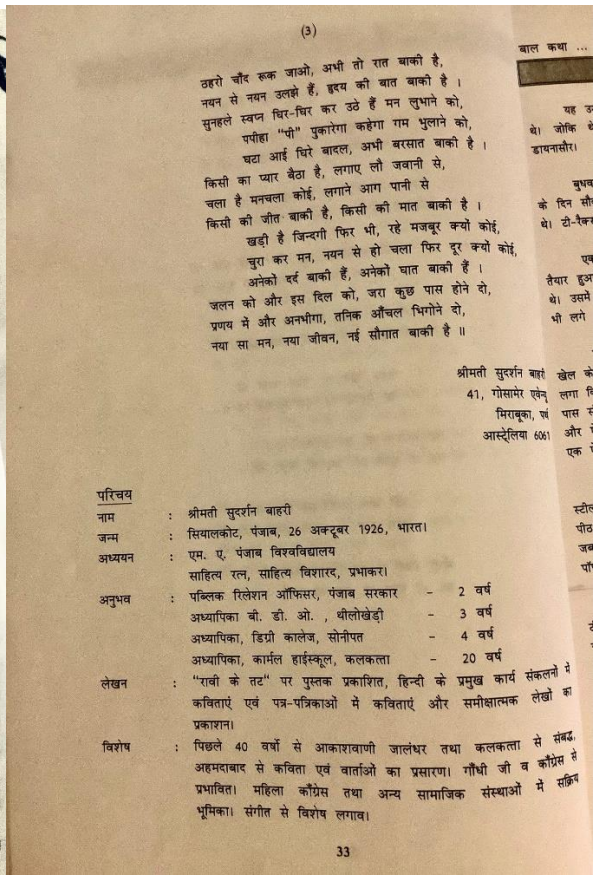

(3)

बाल कथा ...

ठहरो चाँद रुक जाओ, अभी तो रात बाकी है,
नयन से नयन उलझे हैं, हृदय की बात बाकी है ।
सुनहले स्वप्न घिर-घिर कर उठे हैं मन लुभाने को,
पपीहा "पी" पुकारेगा कहेगा गम भुलाने को,
घटा आई घिरे बादल, अभी बरसात बाकी है ।
किसी का प्यार बैठा है, लगाए लौ जवानी से,
चला है मनचला कोई, लगाने आग पानी से
किसी की जीत बाकी है, किसी की मात बाकी है ।
खड़ी है जिन्दगी फिर भी, रहे मजबूर क्यों कोई,
चुरा कर मन, नयन से हो चला फिर दूर क्यों कोई,
अनेकों दर्द बाकी हैं, अनेकों घात बाकी हैं ।
जलन को और इस दिल को, जरा कुछ पास होने दो,
प्रणय में और अनभीगा, तनिक आँचल भिगोने दो,
नया सा मन, नया जीवन, नई सौगात बाकी है ॥

श्रीमती सुदर्शन बाहरी
41, गोसामेर एवेन्यू
मिराबूका, पर्थ
आस्ट्रेलिया 6061

परिचय

नाम	:	श्रीमती सुदर्शन बाहरी
जन्म	:	सियालकोट, पंजाब, 26 अक्टूबर 1926, भारत।
अध्ययन	:	एम. ए. पंजाब विश्वविद्यालय साहित्य रत्न, साहित्य विशारद, प्रभाकर।
अनुभव	:	पब्लिक रिलेशन ऑफिसर, पंजाब सरकार - 2 वर्ष अध्यापिका बी. डी. ओ. , थीलोखेड़ी - 3 वर्ष अध्यापिका, डिग्री कालेज, सोनीपत - 4 वर्ष अध्यापिका, कार्मल हाईस्कूल, कलकत्ता - 20 वर्ष
लेखन	:	"रावी के तट" पर पुस्तक प्रकाशित, हिन्दी के प्रमुख कार्य संकलनों में कविताएं एवं पत्र-पत्रिकाओं में कविताएं और समीक्षात्मक लेखों का प्रकाशन।
विशेष	:	पिछले 40 वर्षों से आकाशवाणी जालंधर तथा कलकत्ता से संबद्ध, अहमदाबाद से कविता एवं वार्ताओं का प्रसारण। गाँधी जी व काँग्रेस से प्रभावित। महिला काँग्रेस तथा अन्य सामाजिक संस्थाओं में सक्रिय भूमिका। संगीत से विशेष लगाव।

Thankyou
HSWA
Volunteers

भारत भारती में प्रकाशित करने के लिए रचनाओं का आमंत्रण

पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया का हिंदी समाज अपनी वार्षिक पत्रिका 'भारत भारती' में प्रकाशित करने के लिए आपकी हिंदी की साहित्यिक रचनायें आमंत्रित करता है।

ये रचनाएँ स्थानीय व्यक्तियों द्वारा स्वरचित लेख, कवितायें, कहानियाँ एवं चुटकुले आदि होने चाहिए। रचनाएँ मौलिक और अप्रकाशित होनी चाहिए। ये रचनायें २ पेज और उससे कम होनी चाहिए। कृपया Arial Unicode MS / Sanskrit फॉन्ट का प्रयोग करें।

कृपया ध्यान दें यह आपकी ज़िम्मेदारी है कि आप किसी भी तरह से कॉपीराइट के नियमों का उल्लंघन नहीं कर रहे हैं। हिन्दी समाज पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया इस तरह के उल्लंघन के लिए किसी के द्वारा किए गये हर्जाना-दावा के लिए उत्तरदायी नहीं होगा।

रचनाएँ भेजने की अंतिम तारीख 15 मई है।

अधिक जानकारी के लिए कुशल कुशलेंद्र से 0432984220 पर या राज्यश्री मालवीय से 0403434530 पर सम्पर्क करें। आप अपनी रचनायें bharatbharti@hindisamajwa.org पर ईमेल कर सकते हैं, साथ में अपना एक फ़ोटो और संक्षिप्त परिचय भी भेजिये जो कि आपकी रचना के साथ पत्रिका में संलग्न किया जायेगा।

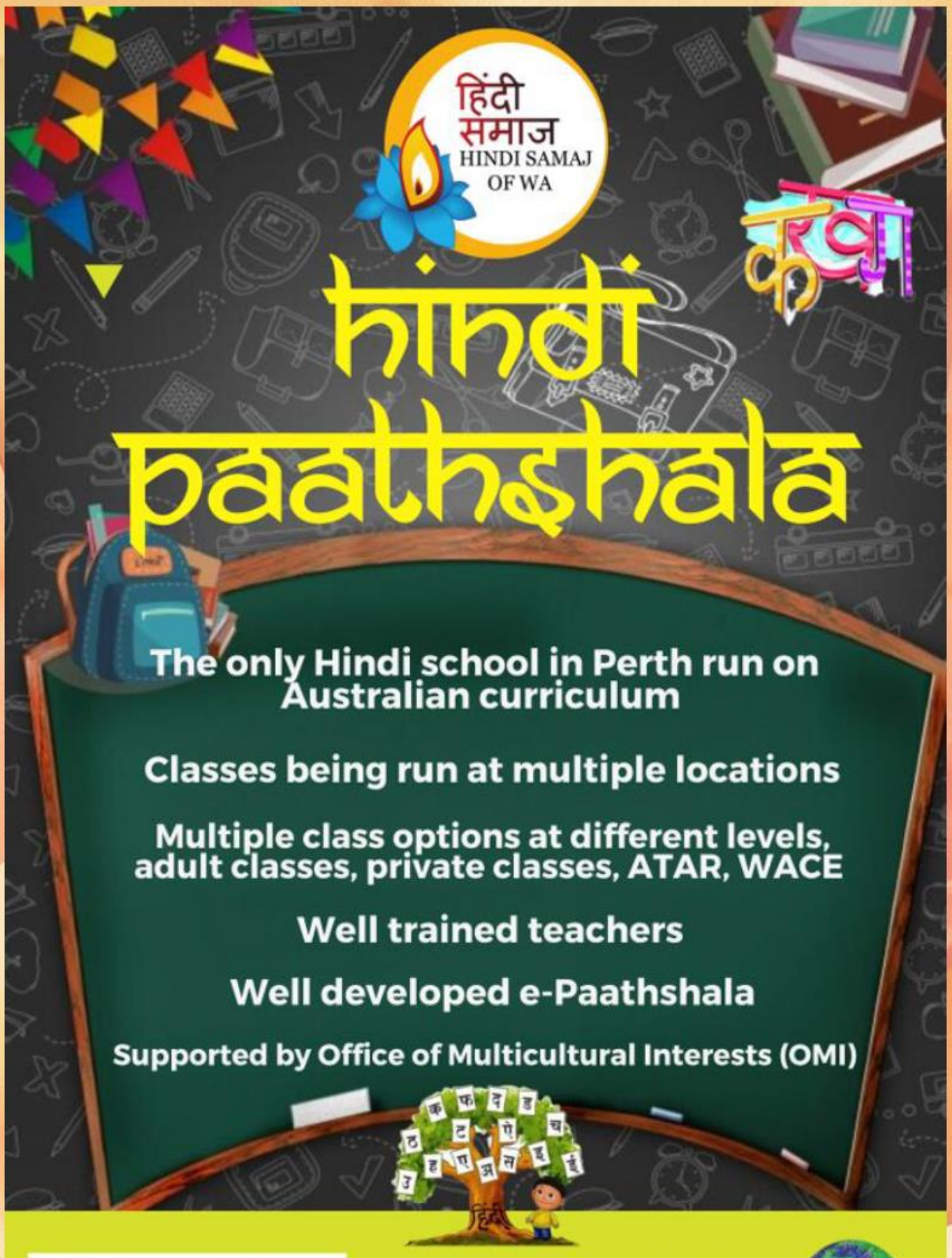
हिंदी
समाज
HINDI SAMAJ
OF WA
कक्षा
hindi
paathshala
The only Hindi school in Perth run on Australian curriculum
Classes being run at multiple locations
Multiple class options at different levels, adult classes, private classes, ATAR, WACE
Well trained teachers
Well developed e-Paathshala
Supported by Office of Multicultural Interests (OMI)
Department of Local Government, Sport and Cultural Industries
Office of Multicultural Interests
FOR MORE INFORMATION CONTACT
PAATHSHALA@HINDISAMAJWA.ORG
हिन्दी

अस्वीकरण

भारत भारती के इस अंक में प्रयोग की गई अधिकांश तस्वीरें हमारे निजी संग्रह से ली गई है । कुछ तस्वीरें लाइसेंस्ड वेबसाइट से ली गई है। यह यहां पर मुक्त प्रयोग के लिए उपलब्ध है। इन सभी तस्वीरों का कॉपीराइट इनके वास्तविक हकदार को जाता है। हम इन तस्वीरों के वास्तविक हकदारों का साभार धन्यवाद करते हैं।

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार व तथ्य रचनाकारों के स्वयं के हैं। अतः संपादक और हिंदी समाज ऑफ वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया किसी प्रकार से इसके लिए उत्तरदाई नहीं है।

कुशल कुशलेंद्र
संपादक भारत भारती

Disclaimer

Most of the images used in this issue of the 'Bharat-Bharati' are from our personal collection. A few images are with a Creative Commons license such that they are available to use when credit is given to the rightful owner. They belong to their rightful owner. I extend my sincere gratitude to the rightful.

The Hindi Samaj of Western Australia and the editor of this magazine are not responsible for the content and views expressed in the articles published in this issue of the 'Bharat-Bharati'. These belong solely to the authors of the articles.

Kushal Kushlendra
Editor: Bharat-Bharati

“

हँस देता जब प्रातः सुनहरे अंचल में बिखरा रोली,
लहरों की बिछलन पर जब मचली पड़ती किरनें भोली,

तब कलियाँ चुपचाप उठाकर पल्लव के घूँघट सुकुमार
छलकी पलकों से कहती है, कितना मादक है संसार!

– महादेवी वर्मा

भारत भारती

2022

रजत से स्वर्ण की यात्रा का पहला चरण

Hswa@live.com.au www.hindisamajwa.org